भूतनाथ

पहला भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भूतनाथ

पहला भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

bpb
भारत पुस्तक भण्डार

www.bharatpustak.com
bharatpustak.bhandar@gmail.com

पहला भाग

1

मेरे पिता ने तो मेरा नाम गदाधर सिंह रखा था और बहुत दिनों तक मैं इसी नाम से प्रसिद्ध भी था परन्तु समय पड़ने पर मैंने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था और इस समय यही नाम बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। आज मैं श्रीमान् महाराज सुरेन्द्रसिंह जी की आज्ञानुसार अपनी जीवनी लिखने बैठा हूँ, परन्तु मैं इस जीवनी को वास्तव में जीवनी के ढंग और नियम पर न लिख कर उपन्यास के ढंग पर लिखूँगा, क्योंकि यद्यपि लोगों का कथन यही है, "तेरी जीवनी से लोगों को नसीहत होगी" परन्तु ऐबों और भयानक घटनाओं से भरी हुई मेरी नीरस जीवनी कदाचित् लोगों को रुचिकर न हो, इस खयाल से जीवनी का रास्ता छोड़ इस लेख को उपन्यास के रूप में लाकर रस पैदा करना ही मुझे आवश्यक जान पड़ा, प्रेमी पाठक महाशय यही समझें कि किसी दूसरे ही आदमी ने भूतनाथ का हाल लिखा है, स्वयं भूतनाथ ने नहीं, अथवा इसका लेखक कोई और ही है।

जेठ का महीना और शुक्ल-पक्ष की चतुर्दशी का दिन है। यद्यपि रात पहर-भर से कुछ ज्यादा हो चुकी है और आँखों में ठंडक पहुँचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे हैं परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन, मकानों की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठंडी नहीं हुई, अब भी कभी-कभी सहारा दे देने वाले हवा के झपटे में गर्मी पड़ती है और बदन से पसीना निकल रहा है, बाग में सैर करने वाले शौकीनों को भी पंखे की जरूरत है, और जंगल में भटकने वाले मुसाफिरों को भी पेड़ों की आड़ बुरी मालूम पड़ती है।

ऐसे समय में मिर्जापुर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर जिस पर बड़े-बड़े घने पेड़ों की कमी तो नहीं है। मगर इस समय पत्तों की कमी के सबब से जिसकी खूबसूरती नष्ट हो गई है, एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल-तलवार तथा तीर-कमान लगाए हुए दो आदमियों को बैठे देखते हैं जिनमें से एक औरत और दूसरा मर्द है। औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी मगर मर्द की उम्र बीस वर्ष से कम मालूम नहीं होती। यद्यपि इन दोनों की पोशाक मामूली सादी और बिलकुल ही साधारण ढंग की है मगर सूरत-शक्ल से यही जान पड़ता है कि ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं बल्कि किसी अमीर बहादुर और क्षत्रीय खानदान के होनहार हैं। जिस तरह मर्द चपकन, पायजामा, कमरबंद और मुड़ासे से अपनी सूरत मर्दाने ढंग की बना रखी है। यकायक सरसरी निगाह देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि यह औरत है, मगर हम खूब जानते हैं कि यह कमसिन औरत नौजवान लड़की है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पोशाक पहिरने पर ही यकताई का दावा करती है, मगर जिसकी शर्मीली आँखें कह देती हैं कि इसमें ढिठाई और दबंगता बिलकुल नहीं है, चेहरे पर गर्द पड़ी है, सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए हैं, तथा रात्रि का समय भी है, इसलिए यहाँ पर इन दोनों की खूबसूरती तथा नखशिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नहीं समझकर केवल इतना ही कह देना काफी समझते हैं कि ये दोनों सौ-दो सौ खूबसूरतों में खूबसूरत हैं। इन दोनों की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जाएगी अस्तु आइए और छिपकर सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

औरत : वास्तव में हम लोग बहुत दूर निकल आए।

मर्दः अब हमें किसी का डर भी नहीं है।

औरत : है तो ऐसा ही परन्तु घोड़ों की तरफ से जरा-सा खुटका होता है, क्योंकि हम दोनों के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान-पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रांत में हम लोगों को खोजेगा।

मर्दःफिर भी कोई चिंता नहीं, क्योंकि उन घोड़ों को भी हम लोग कम-से-कम दो कोस पीछे छोड़ आए हैं।

औरत : बेचारे घोड़े अगर मर न जाते तो हम लोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते।

मर्द : यह गर्मी का जमाना, इतने कड़ाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लंबा सफर करने पर भी घोड़े जिंदा रह जाएँ तो बड़े ताज्जुब की बात है!!

औरत : ठीक है, अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगों को क्या करना होगा?

मर्दः इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नहीं है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुँचे। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा, क्योंकि हम लोग किसी का खून करके नहीं भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे हैं, बल्कि एक अन्यायी हकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे हैं। ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुँच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

औरत : निःसन्देह ऐसा ही है, फिर आपने क्या विचार किया, किसके राज्य में जाने का इरादा है?

मर्दः मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह राजा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नहीं है, यहाँ से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद में पहुँच जाएँगे।

औरत : वाह वाह! तो इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है! आप यहाँ क्यों अटके हुए हैं? आगे बढ़ कर चलिए, जहाँ इतनी तकलीफ उठाई वहाँ थोड़ी ही सही।

मर्द : मैं भी इसी खयाल में हूँ मगर अपने नौकरों का इंतजार कर रहा हूँ क्योंकि उन्हें अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है।

औरत : जब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था में यहाँ ठहरकर नौकरों का इंतजार करना मेरी राय में तो ठीक नहीं है।

मर्द : तुम्हारा कहना कठिन है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जंगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीदा है, संभव है कि रास्ता भूल जाऊँ और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलूँ। यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे घने जंगल में घुसना उचित नहीं जान पड़ता। मगर देखो तो सही (गर्दन उठाकर और गौर से नीचे की तरफ देखकर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं! मगर गिनती में कम मालूम होते हैं।

औरत : **(गौर से देख कर)** ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं, शायद कोई और हों।

मर्द : देखो ये लोग भी इसी पहाड़ी के ऊपर चले आ रहे हैं, अगर ये कोई और हैं तो यहाँ आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा! इसलिए मैं जरा आगे बढ़कर देखता हूँ कि कौन हैं।

इतना कहकर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढ़ा जिधर से वे लोग आ रहे थे। कुछ ही दूर आगे बढ़ने और पहाड़ी से नीचे उतरने पर उन लोगों का सामना हो गया। यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था, तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहचान लिया। हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन-चार मालूम पड़ते थे वास्तव में छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लड़ाई के दुरुस्त थे। ढाल-तलवार के अलावे सभों के कमर में खंजर और हाथ में नेजा था, उन सभों में से एक ने आगे बढ़कर नौजवान से कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगों के सामने चले आए। कल से हम लोग आपकी खोज में परेशान हो रहे हैं बल्कि सच तो यों है कि ईश्वर ही ने हम लोगों को यहाँ तक पहुँचा दिया और यहाँ आपका

सामना हो गया। क्षमा कीजिएगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आपके साथ वेअदवी नहीं करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं, जिसका नमक खाते हैं। इस वात को हम लोग खूव जानते हैं कि आप विलकुल वेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है, परन्तु..

नौजवान : ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे गुलावसिंह! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हूँ और प्यार करता हूँ क्योंकि तुम वास्तव में नेक हो और मुझसे मुहव्वत रखते हो। तुम वेशक् मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो, अस्तु मैं खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियों का धर्म निवाहने के लिए मैं गिरफ्तार न होकर तुमसे लड़ाई अवश्य करूँगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न करना चाहिए।

गुलावसिंह : ठीक है, वेशक् ऐसा ही चाहिए, परन्तु **(कुछ सोच कर)** मेरा हाथ आपके ऊपर कदापि न उठेगा! मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से वदनामी उठाना मंजूर है परन्तु आप ऐसे वहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नहीं है। हाँ मैं अपने साथियों को ऐसा करने के लिए मजवूर न करूँगा, ये लोग जो चाहें करें।

यह सुनते ही गुलावसिंह के साथियों में से एक आदमी वोल उठा, "नहीं नहीं, कदापि नहीं, हम लोग आपके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते और आपकी ही आज्ञा पालन अपना धर्म समझते हैं। सज्जनों और धर्मात्माओं की आज्ञा पालने का नतीजा कभी वुरा नहीं होता!"

इसके साथ ही गुलावसिंह के वाकी साथी भी वोल उठे, "वेशक् ऐसा ही है, वेशक् ऐसा ही है!"

गुलावसिंह : **(प्रसन्नता से)** ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग भी मेरी इच्छानुसार चलने के लिए तैयार हैं। **(नौजवान से)** अव आप ही आज्ञा कीजिए कि हम लोग क्या करें? क्योंकि अव भी मैं अपने को आपका दास ही समझता हूँ।

नौजवान : मेरे प्यारे गुलावसिंह, शावाश! इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे ऐसे नेक और वहादुर आदमी का साथ वड़े भाग्य से होता है। मैं तुम्हें अपने आधीन पाकर वहुत ही प्रसन्न था और अव भी ही इच्छा रहती है कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी वनाये, मगर क्या करूँ, लाचार हूँ, क्योंकि आज मेरा वह समय नहीं है। आज मुसीवत के फंदे में फँस जाने से मैं इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारे ऐसे वहादुरों का साथ...**(लंबी साँस लेकर)** अस्तु ईश्वर की मर्जी, जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है, कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी। **(कुछ सोच कर)** मैं तुम्हें क्या वताऊँ कि क्या करो? तुम्हारे मालिक ने वेशक् धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिए तुम्हें भेजा, इतने दिनों तक साथ रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नहीं पहिचाना। मुझे इस समय कुछ भी नहीं सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करूँ और किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से तुम्हें रोकूँ!

गुलावसिंह : **(कुछ सोच कर)** खैर कोई चिंता नहीं, जो होगा देखा जाएगा। इस समय मैं आपका साथ कदापि न छोड़ूँगा और इस मुसीवत में आपको अकेले भी न रहने दूँगा, जो कुछ आप पर वीतेगी उसे मैं भी सहूँगा। **(अपने साथियों से)** भाइयो, अव तुम लोग जहाँ चाहे जाओ और जो मुनासिव समझो करो, मैं तो आज इनके दुःख-सुख का साथी वनता हूँ। यद्यपि ये **(नौजवान)** उम्र में मुझसे वहुत छोटा है परन्तु मैं इन्हें अपना पिता समझता हूँ और पिता ही की तरह इन्हें मानता हूँ, अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मैं उसे निवाहूँगा। मैं इनको गिरफ्तार करने की आशा पाकर वहुत प्रसन्न था और यही सोचे हुए था कि इस वहाने से इन्हें ढूँढ़ निकालूँगा और सामना होने पर इनकी सेवा स्वीकार करूँगा।

गुलावसिंह की वातें सुनकर उसके साथियों ने जवाव दिया, "ठीक है, जो कुछ उचित था आपने किया परन्तु आप हम लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं? क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नहीं हैं? या हम लोगों को आप वेईमान समझते हैं?"

गुलावसिंह : नहीं-नहीं, ऐसा कदापि नहीं है, मगर वात यह है कि जो कोई मुसीवत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीवत झेलनी पड़ती है, अस्तु मुझ पर तो जो कुछ वीतेगी उसे झेल लूँगा, तुम लोगों को जान-वूझकर क्यों मुसीवत

में डालूँ! इसी खयाल से कहता हूँ कि जहाँ जी में आवे जाओ और जो कुछ मुनासिव समझो करो।

गुलाबसिंह के साथी : नहीं-नहीं, ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ कभी न छोड़ेंगे। आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें।

गुलाबसिंह : **(कुछ सोच कर)** अच्छा, अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम चाहते हैं उसे करो। यहाँ से इसी समय चले जाओ। **(नौजवान की तरफ बता कर)** इनके मकान में जिसे राजा साहब ने जब्त कर लिया है रात के समय जिस तरह संभव हो घुसकर जहाँ तक दौलत हाथ लगे और उठा सको निकाल कर ले आओ और पिपलिया घाटी में जहाँ का पता तुम लोगों को मालूम है हमसे मिलो, अगर वहाँ, हमसे मुलाकात न हो तो टिक कर हमारा इंतजार करो।

गुलाबसिंह की बात सुनकर उसके साथियों ने "जो आज्ञा" कह कर सलाम किया और वहाँ से चले गए। उनके जाने के बाद गुलाबसिंह ने नौजवान से कहा, "इस समय इन लोगों को विदा कर देना ही मैंने उचित जाना। यद्यपि ये लोग मेरे साथ रहने में प्रसन्नता प्रकट करते हैं परन्तु कुछ टेढ़ा काम लेकर जाँच कर लेना जरूरी है।"

नौजवान : ठीक है तुम्हारे ऐसे होशियार आदमी के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

गुलाबसिंह : अच्छा अब यह बताइए कि आपको मुझ पर विश्वास है या नहीं? या इस विषय में आपको कुछ जाँच करने की आवश्यकता है?

नौजवान : नहीं-नहीं, मुझे कुछ जाँच करने की जरूरत नहीं है, मुझे तुम पर पूरा-पूरा विश्वास और भरोसा है, मैं तुमसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुआ, ऐसी अवस्था में यकायक सामना हो जाने पर मुझे किसी तरह का खुटका नहीं हुआ था।

गुलाबसिंह : ईश्वर आपका मंगल करे, अब कृपा कर यह बताइए कि आप मुझे अकेले क्यों दिखाई देते हैं और अब आपका इरादा क्या है?

नौजवान : मैं अकेला नहीं हूँ, मेरी स्त्री भी मेरे साथ है **(हाथ का इशारा करके)** इस पहाड़ी के ऊपर उसे अकेला छोड़ आया हूँ। हम दोनों आदमी वहाँ बैठे अपने नौकरों का इंतजार कर रहे थे कि यकायक तुम लोगों पर निगाह पड़ी, अस्तु उसे उसी जगह छोड़ कर तुम लोगों का पता लगाने के लिए मैं नीचे उतर आया था, अब तुम मेरे साथ वहाँ चलो और उससे मिलो, वह तुम्हें देखकर बहुत ही प्रसन्न होगी। इस आफत में भी वह तुम्हें बराबर याद करती रही।

गुलाबसिंह : चलिए, शीघ्र चलिए।

गुलाबसिंह को साथ लेकर नौजवान उस तरफ रवाना हुआ जहाँ अपनी स्त्री को अकेला छोड़ आया था।

गुलाबसिंह क्षत्री खानदान का एक बहादुर और ताकतवर आदमी था, वह बहुत ही नेक, रहमदिल और धर्म का सच्चा पक्षपाती था, साथ-ही-साथ वह बदमाशों की चालबाजियों को खूब समझता था और अच्छे लोगों में से बेईमानों और दग़ाबाजों को छाँट निकालने में भी विचित्र कारीगर था। वह उस नौजवान और उसकी स्त्री से सच्ची मुहब्बत और हमदर्दी रखता था, जिसका बहुत बड़ा सबब यह था कि उस स्त्री के पिता ने बहुत संकट के समय में गुलाबसिंह की सच्ची सहायता की थी और गुलाबसिंह को लड़के की तरह मानता था।

इस जगह पर हम इस नौजवान और इसकी सुशीला स्त्री का नाम खोल देना उचित समझते हैं। मगर इस बात को अभी न खोलेंगे कि दोनों कौन हैं और इनके इस तरह बेसरोसामान भागने का सबब क्या है।

नौजवान का नाम प्रभाकर सिंह और स्त्री का नाम इंदुमति। प्रभाकर सिंह की शादी इंदुमति के साथ भये हुए आज एक

वर्ष और सात महीने हो चुके हैं।

प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह बातचीत करते हुए इंदुमति की तरफ रवाना हुए और बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचे इंदुमति चिंता-निमग्न बैठी हुई अपने पति का इंतजार कर रही थी। पति को देखकर वह प्रसन्नता के साथ उठ बैठी और जब उसने गुलाबसिंह को पहिचाना तो बहुत खुश होकर बोली

इंदुमति : मैं पहिले ही कहती थी कि गुलाबसिंह को हम लोगों के विषय में बड़ी चिंता होगी और वे जरूर हमारी सुध लेंगे।

गुलाबसिंह : बेशक् ऐसा ही है। इसीलिए जिस समय राजा साहब ने आप लोगों की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और..

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस-पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे। बेचारी इंदु को दुश्मन का खयाल आया गया और वह डरी हुई आवाज में बोली, "यहाँ तक भाग आने पर भी हम लोगों का खुटका न गया, इसी से मैं कहती थी कि जहाँ तक जल्द हो सके नौगढ़ की सरहद में हमें पहुँच जाना चाहिए!"

गुलाबसिंह : **(इंदु से)** डरो मत, हम दोनों क्षत्रियों के रहते किसकी मजाल है कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ पहुँचा सके। इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझारखो कि आज दिन सिवाय उस बेईमान राजा के और कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है और उसकी तरफ से इस काम के लिए मैं ही भेजा गया हूँ, ऐसी अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लगाना वृथा है, हाँ चोर-डाकू में से यदि कोई हो तो मैं कह सकता।

इंदुमति : खैर पेड़ों की आड़ में तो हो जाइए।

गुलाबसिंह : हाँ इसके लिए कोई हर्ज नहीं।

इतने ही में पुनः सीटी की आवाज आई, मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढंग की थी। मालूम न होता था कि कोई बँधे हुए इशारे के साथ झिरनी को आवाज देकर सीटी बुला रहा है। इस आवाज को सुनकर गुलाबसिंह हँस पड़ा और इंदु तथा प्रभाकर सिंह की तरफ देख के बोला, "बस मालूम हो गया, डरने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है, मैं अभी जरूरी बातों से छुट्टी पाकर थोड़ी ही देर में आप लोगों से कहने वाला था कि यहाँ मेरे एक दोस्त का मकान है जिससे मिलकर आप बहुत प्रसन्न होंगे, और उनसे आपको सहायता भी पूरी-पूरी मिल सकती है। मैं अब इस सीटी का जवाब देता हूँ। बहुत अच्छा जो अकस्मात् वे खुद यहाँ आ पहुँचे। मालूम होता है कि मेरा यहाँ आना उन्हें मालूम हो गया!"

इतना कहकर गुलाबसिंह ने भी कुछ अजीब ढंग की सीटी बजाई अर्थात् उस सीटी का जवाब दिया।

प्रभाकर सिंह : भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो बता दो?

गुलाबसिंह : आजकल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है।

प्रभाकर सिंह : **(कुछ सोच कर)** यह नाम तो कई दफे मेरे कानों में पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हूँ कि इस नाम का एक आदमी बड़ा ही भयानक है जिसके रहन-सहन का किसी को कुछ पता नहीं चलता।

गुलाबसिंह : ठीक है, आपने ऐसा ही सुना होगा, परन्तु यह केवल दुष्टों और पापियों के लिए भयानक है।

गुलाबसिंह इससे ज्यादा कुछ कहने न पाया था कि सीटी बजाने वाला अर्थात् भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा। प्रभाकर सिंह को

सलाम करने के बाद भूतनाथ गुलाबसिंह के गले मिला और इसके बाद चारों आदमी पत्थर की चट्टानों पर बैठकर इस तरह बातचीत करने लगे :

गुलाबसिंह : **(भूतनाथ से)** यहाँ यकायक आपका इस तरह आ पहुँचना बड़े आश्चर्य की बात है।।

भूतनाथ : आश्चर्य काहे का है! यहाँ तो मेरा ठिकाना ही ठहरा, या यों कहिए कि यह दिन-रात का मेरा रास्ता ही है।

गुलाबसिंह : ठीक है, मगर फिर भी आपका घर यहाँ से आधे घंटे की दूरी पर होगा ऐसी अवस्था में क्या जरूरी है कि आप दिन-रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें?

भूतनाथ : **(हँसकर)** हाँ सो तो सच है, मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय, आखिर मुलाकात करना भी तो जरूरी ठहरा!

गुलाबसिंह : **(हँसी के साथ)** बस तो सीधे यही क्यों नहीं कहते कि मेरा यहाँ आना आपको मालूम हो गया।

भूतनाथ : बेशक् आपका आना मुझे मालूम हो गया बल्कि और भी कई बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को हाशियार कर देना जरूरी है। **(प्रभाकर सिंह की तरफ देख कर)** अभी तक दुश्मनों से आपका पीछा नहीं छूटा, खाली गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिए नहीं भेजे गये बल्कि इनको भेजने के बाद आपके राजा साहब ने और भी बहुत से आदमी आप लोगों को पकड़ने के लिये भेजे जो इस समय इस पहाड़ी के इधर-उधर आ गये हैं और आपके आदमियों को भी उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद आप इंतजार करते होंगे।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब में आकर)** आपकी जुबानी बहुत-सी बातें मालूम हुईं! मुझे इन सबकी कुछ भी खबर न थी। आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर आइने के अन्दर जमाने भर की हालत देख-देख कर सच्चा में बयान करता हो!

गुलाबसिंह : यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बड़े-बड़े नामी ऐयार दंग रहा करते हैं। इनसे किसी भेद का छिपा रहना बहुत ही कठिन है। **(भूतनाथ से)** अच्छा तो मेरे प्यारे दोस्त, मैं प्रभाकर सिंह और इंदुमति को आपके सुपुर्द करता हूँ। जिससे इनका कल्याण हो सो कीजिए। यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि मैं इन्हें कैसा मानता हूँ।

भूतनाथ : मैं सब जानता हूँ और इसीलिए यहाँ आया भी हूँ, परन्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नहीं, आप ठहरिए और मेरे पीछे आइए।

प्रभाकर सिंह : **(उठते हुए)** मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है, केवल बेचारी इंदु के लिए मुझे नामर्दों की तरह भागने की और अदने-अदने आदमियों से छिपकर चलने...

भूतनाथ : **(बात काटकर)** मैं खूब जानता हूँ, मगर क्या कीजिएगा, समय पर सब कुछ करना पड़ता है, आँख रहते भी टटोलना पड़ता है!

सब कोई उठकर भूतनाथ के पीछे-पीछे रवाना हुए।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घंटे गुजर गये।

पिछले पहर की रात बीत रही है, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इन चारों के पैरों के तले दबने वाले सूखे पत्तों की चरमराहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती। भूतनाथ इन तीनों को साथ लिए हुए एक अनूठे और अनजान रास्ते से बात-की-बात में पहाड़ी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा। जंगल-ही-जंगल लगभग आधा कोस के जाने के बाद ये लोग पुनः एक पहाड़ के नीचे पहुँचे। इस जगह का जंगल बहुत

ही घना तथा रास्ता घूमघुमौवा और पथरीला था। भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडंडियों पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नहीं कर सकता था, अथवा यों समझना चाहिए कि एक-दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आकर भटक सकता था, किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है।

कुछ ऊपर चढ़ने के बाद घूमता-फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पत्थरों के बड़े-बड़े ढोकों के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी। इन तीनों के लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा। आगे-आगे भूतनाथ, उसके पीछे गुलाबसिंह, उसके बाद इंदुमति और सबसे पीछे प्रभाकर सिंह जाने लगे। कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने के बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से समान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियों को ले जाने लगा। लगभग पचीस गज के जाने के बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् जहाँ से एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था, दूसरा बाईं तरफ, और तीसरी सुरंग दाहिनी तरफ चली गई थी, तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से ये लोग आये थे। यहाँ तक तो रास्ता खुलासा था मगर आने का रास्ता बहुत ही बारीक और तंग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिलकर नहीं चल सकते थे।

यहाँ पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की दोनों सुरंगों को बताकर अपने साथियों से बोला, "हमारे मकान में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसना चाहिए। सामने अथवा बाईं तरफ वाली सुरंग में जाने वाला किसी तरह जीता नहीं बच सकता है।"

इतना कहकर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसा और कुछ दूर जाने के बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी।

लगभग दो सौ कदम चले जाने के बाद यह सुरंग खतम हुई और उसका दूसरा मुहाना नजर आया। सबके पहले भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ, उसके बाद गुलाबसिंह और उसके पीछे इंदुमति रवाना हुई, मगर प्रभाकर सिंह न निकले तीन आदमी घूम कर उनका इंतजार करने लगे कि शायद पीछे रह गए हों मगर कुछ देर इंतजार करने पर भी वे नजर न आये। इंदुमति का कलेजा उछलने लगा, उसकी दाहिनी भुजा फड़क उठी और आँखों में आँसू डबडबा आये। भूतनाथ ने इंदुमति और गुलाबसिंह को कहा, "तुम जरा इसी जगह दम लो, मैं सुरंग में घुस कर प्रभाकर सिंह का पता लगाता हूँ।" इतना कहकर भूतनाथ पुनः उसी सुरंग में घुस गया।

2

प्रभाकर सिंह पीछे-पीछे चले आते थे, यकायक कैसे और कहाँ गायब हो गये? क्या उस सुरंग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड़ लिया? या उन्होंने खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड़ दिया? इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचती हुई इंदु बहुत ही परेशान हुई, मगर इस आशा ने कि अभी-अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरंग से लौटाता ही होगा, उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एकदम सुरंग की तरफ टकटकी लगाये खड़ी देखती रही, परन्तु थोड़ी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दुःख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि "उनसे मुलाकात नहीं हुई! मेरी समझ में नहीं आता कि क्या भेद है और उन्होंने हमारा साथ क्यों छोड़ा? क्योंकि अगर किसी छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुँह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही'!

गुलाबसिंह : नहीं भूतनाथ, ऐसा तो नहीं हो सकता। प्रभाकर सिंह पर हम भागने का इलजाम तो नहीं लगा सकते।

भूतनाथ : जी तो मेरा भी नहीं चाहता कि उनके विषय में मैं ऐसा कहूँ परन्तु घटना ऐसी विचित्र हो गई कि मैं किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नहीं सकता। हाँ इंदुमति कदाचित् इस विषय में कुछ कह सकती हों!

इतना कह कर भूतनाथ ने इंदु की तरफ देखा मगर इंदु ने कुछ जवाब न दिया, सिर झुकाये जमीन को देखती रही, मानो उसने कुछ सुना ही नहीं! अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे संबोधन किया जिससे वह चौंकी और एकदम फूट-फूट कर रोने और कहने लगी, "बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी। मालूम हो गया कि मेरा बदकिस्मती मेरा साथ न छोड़ेगी। मैं व्यर्थ ही आशा में पड़ कर दुखी हुई और उन्हें भी दुःख दिया। मेरे ही लिए उन्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा और मुझ अभागिन के ही कारण उन्हें जंगल की खाक छाननी पड़ी। हाय, क्या अब मैं पुनः इस दुनिया में रहकर उनके दर्शन कर सकती हूँ? क्यों न इसी समय अपने दुखांत नाटक का अंतिम पर्दा गिरा कर निश्चिन्त हो जाऊँ?"

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इंदु प्रलापवास्था को लाँघकर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पड़ी।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बड़ी चिंता हुई और वे लोग उसे होश में लाकर समझाने-बुझाने तथा शान्त करने की चिंता करने लगे।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ विचित्र ढंग का था। इसमें भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी, इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुन्दर बनाया हुआ था। इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि उसने इसे खोज निकाला था, जिसका रास्ता बहुत ही कठिन और भयानक था। जिस जगह इंदुमति, भूतनाथ और गुलाबसिंह खड़े हैं वहाँ से दिन के समय यदि आप आँख उठाकर चारों तरफ देखिए तो आपको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पन्द्रह बिगहे के चौरस जमीन, चारों तरफ के ऊँचे-ऊँचे और सरसब्ज पहाड़ों से सुन्दर और सुहावने सरोवर के जल की तरह घिरी हुई है। जिस तरह चारों तरफ के पहाड़ों पर खुशरंग फूल-पत्ती की बहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन भी नरम घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना बन रही है और जगह-जगह पर पहाड़ से गिरे हुए छोटे-छोटे चश्मे भी बह रहे हैं। यद्यपि आजकल पहाड़ों के लिये सरसब्जी का मौसम नहीं है मगर यहाँ पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सबब से 'पतझड़ के मौसम का कुछ पता नहीं लगता, यों समझ सकते हैं कि बरसात के मौसम में आजकल से कहीं बढ़-चढ़कर खुबी, खूबसूरती और सरसब्जी नजर आती होगी।

इस स्थान में किसी तरह की इमारत बनी हुई न थी मगर चारों तरफ के पहाड़ों में सुन्दर और सुहावनी गुफाओं और कंदराओं की इतनी बहुतायत थी कि हजारों आदमी बड़ी खुशी और आराम के साथ यहाँ गुजारा कर सकते थे। इन्हीं गुफाओं में भूतनाथ तथा उसके तीस-चालीस संगी-साथियों का डेरा था और इन्हीं गुफाओं में उसके जरूरत की सब चीजें और हर्बे इत्यादि रहा करते थे, तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कहीं इन्हीं जगहों में होगी, जिसका ठीक-ठीक पता उसके साथियों को भी न था। भूतनाथ का कथन ऐसे-ऐसे कई स्थान उसके कब्जे में हैं और इस बात का कोई निश्चय नहीं है कि कब या कितने दिनों तक यह किस स्थान में अपना डेरा रखता या रखेगा।

सुबह की सफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी अब भूतनाथ और गुलाबसिंह के उद्योग से इंदुमति होश में आई। यद्यपि वह खुद इस खोह के बाहर होकर प्रभाकर सिंह की खोज में जान तक देने के लिए तैयार थी और ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ और गुलाबसिंह ने उसे बहुत समझा-बुझाकर ऐसा करने से बाज रखा और वादा किया कि बहुत जल्दी उनका पता लगाकर उनके दुश्मनों को नीचा दिखाएँगे।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि भूतनाथ के आदमी गुफाओं और कंदराओं में से निकलकर वहाँ आ पहुँचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा में कुछ समझा-बुझाकर बिदा किया। इसके बाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा में जो उसके डेरे के बगल में थी इंदुमति का डेरा दिलाकर और गुलाबसिंह को उसके पास छोड़कर वह भी उन दोनों से विदा हुआ और अपने एक शागिर्द को साथ लेकर उसी सुरंग की राह अपनी इस दिलचस्प पहाड़ी के बाहर हो गया।

1जब भूतनाथ सुरंग के बाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उसे जरूरी कामों अथवा नहाने-धोने, खाने-पीने की कुछ भी फिक्र न थी, वह केवल प्रभाकर सिंह का पता लगाने की धुन में था।

यह वह जमाना था जब चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को बैठे दो वर्ष का समय बीत चुका था। उसकी ऐयाशी की चर्चा घर-घर में फैल रही थी और बहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे। उधर जमानिया में दारोगा साहब की बदौलत तरह-तरह के साजिशें हो रही थीं और उनकी कमेटी का दौरदौरा खूब अच्छी तरह तरक्की कर रहा था[1] अस्तु इस समय खड़े होकर सोचते हुए भूतनाथ का ध्यान एक दफे जमानिया की तरफ और फिर दूसरी दफे चुनारगढ़ की तरफ गया।

सुरंग से बाहर निकल एक घने पेड़ के नीचे भूतनाथ बैठ गया और उसने अपने शागिर्द से, जिसका नाम भोलासिंह था, कहा

भूतनाथ : भोलासिंह, मुझे इस बात का शक होता है कि किसी दुश्मन ने इस खोह का रास्ता देख लिया और मौका पाकर उसने प्रभाकर सिंह को पकड़ लिया।

भोलासिंह : मगर गुरुजी, मेरे चित्त में तो यह बात नहीं बैठती। क्या प्रभाकर सिंह इतने कमजोर थे कि आपके पीछे आते समय एक आदमी ने उन्हें पकड़ लिया और उनके मुँह से आवाज तक न निकली? इसके अतिरिक्त यह तो संभव ही न था कि बहुत से आदमी आपके पीछे-पीछे आते और आपको आहट भी न मिलती।

भूतनाथ : तुम्हारा कहना ठीक है और इन्हीं बातों को सोचकर मैं कह रहा हूँ कि दुश्मन के आने का शक होता है, यह नहीं कहता कि निश्चय होता है अस्तु जो कुछ हो, मैं प्रभाकर सिंह का पता लगाने के लिए जाता हूँ और तुमको इसी जगह छोड़कर ताकीद कर जाता हूँ कि जब तक मैं लौट कर न आऊँ तब तक सूरत बदले हुए यहाँ पर रहो और चारों तरफ घूम-फिर कर टोह लो कि किसी दुश्मन ने इस सुरंग का पता तो नहीं लगा लिया है। अगर ऐसा हुआ होगा तो कोई-न-कोई यहाँ आता-जाता तुम्हें जरूर दिखाई देगा। यदि कोई जरूरत पड़े तो तुम निःसन्देह अपने डेरे पर **(सुरंग के अंदर)** चले जाना, मैं इसके लिए तुम्हें मना नहीं करता मगर जो कुछ मेरा मतलब है उसे तुम जरूर अक्छी तरह समझ गए होंगे।

भोलासिंह : जी हाँ मैं अच्छी तरह समझ गया, जहाँ तक हो सकेगा मैं इस काम को होशियारी के साथ करूँगा, आप जहाँ इच्छा हो जाइए और इस तरफ से बेफिक्र रहिए।

भूतनाथ : अच्छा तो अब मैं जाता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ भोलासिंह से विदा हुआ और उसी घूमघुमौवे रास्ते से होता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर आया, और इधर भोलासिंह देहाती ब्राह्मण की सूरत बना जंगल में इधर-उधर घूमने लगा।

ठीक दोपहर का समय था। धूप खूब कड़ाके की पड़ रही थी और गर्म-गर्म लू के झपेटे बदन का झुलसा रहे थे। ऐसे समय में भूतनाथ का शागिर्द भोलासिंह गर्मी से परेशान होकर एक घने पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था। यह स्थान यद्यपि उस सुरंग से लगभग दो-ढाई सौ दम की दूरी पर होगा परन्तु यहाँ से घूमघुमौवे रास्ते और जंगली पेड़ों तथा लताओं की झाड़ियों के कारण बहुत ध्यान देने पर भी उस सुरंग का मुहाना दिखाई नहीं देता था। भोलासिंह बैठा कुछ सोच रहा था कि यकायक उसके कान में कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई।

हमारे पाठकों में से जो महाशय जंगल की हवा खा चुके या पहाड़ों की सैर कर चुके हैं उन्हें यह बात जरूर मालूम होगी कि जंगल में सन्नाटे के समय मुसाफिरों के बातचीत करते हुए चलने की आहट बहुत दूर-दूर तक के लोगों को मिल जाती है, यहाँ तक कि आध कोस की दूरी पर यदि दो-चार आदमी बातचीत करते हुए जाते हों तो ऐसा मालूम होगा कि थोड़ी दूर पर आदमी बातें कर रहे हैं परन्तु शब्द साफ-साफ सुनाई न देंगे, साथ ही इसके इस बात का पता लगाना भी जरा कठिन होगा कि ये बातचीत करते हुए जाने वाले आदमी किधर और कितनी दूर होंगे। अस्तु जब भोलासिंह को कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई तो ठीक-ठीक पता लगाने और जाँच करने की नीयत से वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और चारों तरफ गौर से देखने लगा मगर कुछ पता न लगा और न कोई आदमी ही दिखाई पड़ा। लाचार वह पेड़ के नीचे उतर आया और उसी आहट की सीध पर खूब गौर करता हुआ उत्तर की तरफ चल पड़ा जिधर के जंगली पेड़ बहुत घने और गुंजान थे।

कुछ दूर तक चले जाने पर भी भोलासिंह को किसी आदमी का तो पता न लगा मगर एक छोटे से पेड़ के नीचे बेहोश प्रभाकर सिंह पड़े जरूर दिखाई दिए यद्यपि उसने आज रात के समय प्रभाकर सिंह को देखा न था क्योंकि उस घाटी में जहाँ भूतनाथ का डेरा था पहुँचने के पहिले ही वह गायब हो चुके थे, परन्तु प्रभाकर सिंह एक अमीर बहादुर और नामी आदमी थे इसलिए भोलासिंह उन्हें पहिचानता जरूरत था और कई दफे ऐयारी की धुन में शहर में घूमते हुए उसने प्रभाकर सिंह को देखा भी था। इसके अतिरिक्त आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकर सिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक् फलाने ढंग की थी तथा उनके पास अमुक हर्बे थे। इन सब कारणों से भोलासिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह की कोई दिक्क्त नहीं हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पड़े हुए देखते ही चौंक पड़ा। वह उनके पास बैठ गया और गौर से देखने लगा कि क्या उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड़ गया है। किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नहीं हैं बल्कि बेहोश पड़े हैं।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और सुँघाने लगा थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह होश में आ गए ओर उन्होंने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठा देखा।

प्रभाकर सिंह : आप कौन हैं? कृपा कर अपना परिचय दीजिए। मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ क्योंकि आज निःसन्देह आपने मेरी जान बचाई।

भोलासिंह : मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूँ। इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पड़े हुए देखा, फिर जो कुछ बन सका किया।

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** नहीं, कदापि नहीं, आप ब्राह्मण भले ही हों परन्तु देहाती और गरीब नही हो सकते, आप जरूर कोई ऐयार हैं।

भोलासिंह : यह शक आपको कैसे हुआ?

प्रभाकर सिंह : यद्यपि मैं ऐयारी नहीं जानता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम न था क्योंकि आपको बहुत उम्दा लखलखा सुँघाकर मेरी बेहोशी दूर की है जिसकी खुशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूँज रही है। क्या कोई आदमी जो ऐयारी नहीं जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है? आप ही बताइए!

भोलासिंह : आपका कहना ठीक है मगर मैं..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, इसमें कुछ सोचने और बात बनाने की जरूरत नहीं है, मैं आपसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे निश्चय है कि आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार हैं जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नहीं सकती।

भोलासिंह : **(कुछ सोच कर)** बात तो बेशक् ऐसी ही है, मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हूँ और वे आपका पता लगाने के लिए गए हैं, मगर यह तो बताइए कि आप यकायक गायब क्यों हो गए और आपकी ऐसी दशा किसने की है?

प्रभाकर सिंह : मैं यह सब हाल तुमसे बयान करूँगा और यह भी बताऊँगा कि क्योंकर मेरी जान बच गई, मगर इस समय नहीं क्योंकि दुश्मनों के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हूँ और जब मुझमें ज्यादा बात करने की ताकत नहीं है, अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो, वहाँ सब कुछ सुन लेना और उसी समय इंदुमति तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जाएगा। यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नहीं है मगर तुम्हारे मोढ़े का सहारा लेकर धीरे-धीरे वहाँ तक पहुँच ही जाऊँगा।

भोलासिंह : अच्छी बात है, मैं तो आपको अपनी पीठ पर लादकर भी ले जाव सकता हूँ।

प्रभाकर सिंह : ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नहीं है, अच्छा अब आप अपना नाम तो बता दो।

भोलासिंह : मेरा नाम भोलासिंह है।

इतना कहकर भोलासिंह उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ का सहारा देकर प्रभाकरसिंह को उठाया। वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इसलिये भोलासिंह उन्हें टेकाता और सहारा देता हुआ बड़ी कठिनता से सुरंग के मुहाने पर ले आया। वहाँ पर प्रभाकर सिंह ने बैठकर कुछ देर तक सुस्ताने की इच्छा प्रकट की अस्तु उन्हें बैठाकर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया। इस समय दिन पहर भर के लगभग रह गया होगा। आह, यहाँ पर भोलासिंह ने बेढब धोखा खाया। यह जो प्रभाकर सिंह उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में प्रभाकर सिंह नहीं है बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार है जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा, यह उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया चाहता है और इंदुमति पर कब्जा कर लेने की धुन में है यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार और बुद्धिमान हैं मगर साथ ही इसके उसे भांग का बहुत शौक है। सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक्त छाने बिना उसका जी नहीं मानता। इतने पर भी बस नहीं, कभी-कभी वह नशे को कमी समझ कर दो-चार दम गाँजे के भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी-कभी बेढब धोखा खा जाता है। मगर यह ऐयार भी बड़ा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है, देखना चाहिए दोनों में क्योंकर निपटती है। भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकर सिंह को खोज निकाला, और वह ऐयार सोचता है कि अब इंदुमति पर कब्जा करना कौन बड़ी बात है?

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खड़े हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकर सिंह को साथ लिए सुरंग के अन्दर चला गया।

3

बेचारी इंदुमति बड़े ही संकट में पड़ गई है। प्रभाकर सिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बड़ा ही दुःखदायी हुआ इस समय उसके आगे दुनिया अँधकार हो रही है। उसे कहीं भी किसी तरह का सहारा नहीं सूझता। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा। उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने-धोने की फिक्र, वह सिर झुकाए अपने प्यारे पति की चिंता में डूबी हुई है। गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह-तरह की बातों से उसे संतोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने मन की दो-चार बातें कह कर चुप हो जाती है! हाँ जब-जब उसके कान में ये शब्द पड़ जाते हैं कि 'भूतनाथ का उद्योग कदापि वृथा नहीं हो सकता, वह जरूर प्रभाकर सिंह को खोज निकालेंगे और यह अपने साथ लेकर ही आवेंगे' तब-तब वह चौंक पड़ती है। आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिए उधर की टकटकी बँध जाती है।

इस बीच में इंदु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा, "तुम मुझे साथ लेकर इस सुंरग के बाहर निकलो, मैं खुद मर्दाना भेष बनाकर उसका पता लगाऊँगी।" मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया। अन्त में दिन बीत जाने पर संध्या के समय जब सूर्य अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इंदु से वादा किया कि अच्छा अगर कल तक भूतनाथ लौटकर न आ जाएँगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूँगा और फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूँगा।

गुलाबसिंह के इस वादे से इंदु को थोड़ी-सी ढाढस मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला। इसके बाद गुलाबसिंह से बोली कि 'इस समय तो मैं स्नान इत्यादि कुछ भी नहीं करूँगी, हाँ यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिए नीचे उतर कर मैदान में टहलूँ और दिल बहलाऊँ'। गुलाबसिंह ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने-फिरने की इजाजत दे दी।

इंदुमति का घूमने-फिरने के लिए गुलाबसिंह से आज्ञा ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलावे बल्कि उसका असल मतलब यह था कि वह अकेले में बैठकर या घूम-फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिए क्योंकि गुलाबसिंह की समझाने-बुझाने वाली बातों से दुखी हो गई थी। उसका हरदम पास बैठे रह कर दिलासा देना या ढाँढस बँधाना उसे बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इंदुमति गुलाबसिंह के पास से उठी और धीरे-धीरे चलकर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुँचकर टहलने लगी। उधर गुलाबसिंह भी दिन भर का भूखा-प्यासा था। अतः जरी कामों से निपटने और कुछ खाने-पीने की फिक्र में लगा।

धीरे-धीरे घूमती-फिरती इंदुमति उस सुरंग के मुहाने के पास आ पहुँची जो यहाँ आने-जाने का रास्ता था और पहाड़ी के साथ एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसका मुँह सुरंग की तरफ था और इस आशा से बराबर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकर सिंह को लिए हुए भूतनाथ अब आता ही होगा। उसी समय नकली प्रभाकर सिंह को लिए हुए भोलासिंह वहाँ आ पहुँचा और सुरंग के बाहर निकलते ही इंदु की निगाह उन पर पड़ी तथा उन दोनों ने भी इंदु को देखा।

इस समय भोलासिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इंदु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगाह पड़ते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ वहाँ भेज दिया है और पीछे-पीछे भूतनाथ खुद भी आता होगा।

नकली प्रभाकर सिंह और भोलासिंह सुरंग से निकल कर पाँच कदम आगे न बढ़े होंगे कि प्रभाकर सिंह को देखते ही इंदुमति पागलों की तरह दौड़ती हुई उनके पास पहुँची और उनके पैरों पर गिर पड़ी।

हाय, वेचारी इंदु को क्या खवर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नहीं बल्कि कोई मक्कार उसकी सूरत बना मुझे धोखा देने के लिए यहाँ आया है। तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस बात पर शक करने का मौका भी न मिला। वह उसे अपना पति समझकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और वियोग के दुःख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गद्‌गद् कर दिया। कंठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ बोल न सकी, केवल गरम-गरम आँसू गिराती रही। भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा।

नकली प्रभाकर ने इंदुमति से कुछ न कहकर भोलासिंह से कहा, "भाई भोलासिंह, अब तो मैं बिलकुल ही थक गया हूँ। मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नहीं चलने देती। इंदु से मिलने का उत्साह मुझे यहाँ तक साहस देकर ले आया यही गनीमत है, नहीं दुश्मनों के दिए हुए जहर की बदौलत बिलकुल ही कमजोर हो गया हूँ। इत्तिफाक की बात है कि इंदु मुझे इसी जगह मिल गई। अब मैं कुछ देर तक सुस्ताए बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता अस्तु तुम जाओ, गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूँ।" डेरा सैकड़ों कदम की दूरी पर था, तमाम मैदान पार करने के बाद पहाड़ी पर चढ़कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था, अस्तु वहाँ तक जाने और आने में घड़ी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौड़ा-दौड़ा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकर सिंह से मिलने के लिए भोलासिंह के साथ चल पड़े।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर पहुँचा तो वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। न तो प्रभाकर सिंह दिखाई पड़े और न इंदुमति ही नजर आई। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। वह घबड़ाकर चारों तरफ देखने के बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया "हाय, मैंने बुरा धोखा खाया। प्रभाकर सिंह के साथ-ही-साथ इंदुमति को भी हाथ से खो बैठा।"

4

अब हम यहाँ पर कुछ हाल प्रभाकर सिंह का लिखना जरूरी समझते हैं। पहिले बयान में हम लिख आए हैं कि 'प्रभाकर सिंह इंदुमति और गुलाबसिंह को लेकर भूतनाथ अपनी घाटी में गया तो रास्ते में सुरंग के अन्दर से यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए।' अस्तु इसी जगह से हम प्रभाकर सिंह का हाल लिखना शुरू करते हैं।

जब भूतनाथ उन लोगों को साथ लिए हुए सुरंग में गया और कुछ दूर जाने के बाद चौमुहानी पर पहुँचा तो रास्ते का हाल बताकर कुछ आगे चलने के बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और उसे यही खयाल रहा कि हमारे तीनों मेहमान हमारे पीछे-पीछे चले आ रहे हैं, मगर वास्तव में ऐसा न था। चौमुहानी से थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने के बाद किसी ने प्रभाकर सिंह के दाहिने मोढ़े पर अपना हाथ रखा जो सबके पीछे-पीछे जा रहे थे। प्रभाकर सिंह ने चौंककर पीछे की तरफ देखा मगर अँधकार में कुछ भी दिखाई न दिया, हाँ एक हलकी-सी आवाज यह सुनाई पड़ी 'ठहरो, और जरा मेरी बात सुन कर तब आगे बढ़ो।' ठहरें या न ठहरें, भूतनाथ को रोकें अथवा चुप रहें इत्यादि सोचते हुए प्रभाकर सिंह कुछ ही देर रुके थे कि उनके कान में पुनः एक बारीक आवाज आई, "घबड़ाओ मत, जरा-सा रुककर सुनते जाओ कि अब तुम कैसी आफत में फँसना चाहते हो और उससे छुटकारा पाने की क्या तदबीर है!"

इन शब्दों ने प्रभाकर सिंह को और भी रोक लिया और वह कुछ ठिठके-से रुककर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। इतने ही में पिछली तरफ रोशनी मालूम हुई जो उसी चौराहे पर थी जिसे यह लोग छोड़कर कुछ दूर आगे बढ़ आये थे। उस रोशनी में दो औरतें दिखाई पड़ीं और यह भी मालूम पड़ा कि जिसने प्रभाकर सिंह के मोढ़े पर हाथ रख कर उन्हें रोका था वह भी एक औरत ही है जो अब कुछ पीछे हट इन्हें पुनः अपनी तरफ बुला रही है।

यद्यपि इस कार्रवाई में बहुत देर लगी तथापि इसी बीच में उस अनूठी और पेचीली सुरंग में गुलाबसिंह और इंदुमति को लिए भूतनाथ इतना आगे बढ़ गया कि न तो वह इन दोनों की बात ही सुन सका और न चौमुहानी वाली रोशनी ही पर उसकी निगाह पड़ी। कुछ वर्तमान और कुछ भविष्य को सोचते हुए प्रभाकर सिंह अटके और उन औरतों से जो कम-उम्र, नाजुक और सुन्दर थीं डरना व्यर्थ समझ कर चौमुहानी की तरफ मुड़कर उस औरत की तरफ चले जिसने इन्हें रोका था।

इन तीनों औरतों का नखशिख बयान करने और इनकी खूबसूरती के बारे में लिखने की यहाँ कुछ जरूरत नहीं है। यहाँ इतना ही कहना काफी है जितना कह आये हैं अर्थात् तीनों कम उम्र की थीं, नाजुक थीं, सुन्दर थीं भड़कीली पोशाक् पहिरे हुए थीं।

जब चौमुहानी पर पहुँचे तो उन दोनों औरतों में से एक ने जो पहिले ही से वहाँ खड़ी थी प्रभाकर सिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा, "भूतनाथ ने जरूर आप को कहा होगा कि चौमुहानी से उसके घर का रास्ता छोड़कर बाकी दोनों तरफ जाना खतरनाक है, मगर नहीं, वह बिलकुल झूठा है। आप जरा इधर आइए और देखिए मैं आपको कैसा अनूठा तमाशा दिखाती हूँ।"

इतना कहकर दोनों बल्कि तीनों औरतें प्रभाकर सिंह को सुरंग के उस रास्ते में ले चलीं जिधर जाने के लिए भूतनाथ ने मना किया था। हम नहीं कह सकते कि क्या सोच-समझकर प्रभाकर सिंह ने इन औरतों की बात मान ली और भूतनाथ की नसीहत पर कुछ भी ध्यान न दिया अथवा भूतनाथ का साथ छोड़ दिया। क्या संभव है कि वे इन तीनों औरतों को पहिले से पहिचानते हों?

लगभग पन्द्रह या बीस कदम जाने के बाद उस तीसरी औरत ने जिसके हाथ में रोशनी थी नखरे के साथ हाथ से मोमबत्ती गिरा दी जिससे अँधकार हो गया। उसने यही जाहिर किया कि यह बात धोखे में उससे हो गई। उसके बाद उस औरत ने इनका हाथ भी छोड़ दिया। प्रभाकर सिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और बोले "जो हुआ सो हुआ, अब रोशनी करो तो मैं तुम्हारे साथ आगे बढ़ूँगा नहीं तो पीछे की तरफ मुड़ जाऊँगा।" मगर उनकी इस बात का किसी ने

भी जवाब न दिया। आश्चर्य के साथ प्रभाकर सिंह ने पुनः पुकारा मगर फिर जवाब न मिला, मानो वहाँ कोई था ही नहीं।

आश्चर्य और चिंता के शिकार प्रभाकर सिंह कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने पर पहुँच सके। आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकराकर खड़े हो गए और सोचने लगे "हैं, यह क्या मामला है! अभी-अभी तो हम लोग इधर से आ रहे हैं, फिर यह दीवार कैसा? रास्ता क्योंकर बंद हो गया? क्या अब इस तरफ का रास्ता बंद हो ही गया!" इत्यादि।

वास्तव में पीछे फिरने का रास्ता बंद हो गया मगर अँधेरे में इस बात का पता नहीं लग सकता था कि यह कोई दीवार बीच में आ पड़ी है या किसी तरह के तख्ते या दरवाजे ने बगल से निकल कर रास्ता बंद कर दिया है अथवा क्या है! जो हो, प्रभाकर सिंह को निश्चय हो गया कि अब पीछे की तरफ लौटना असंभव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ बढ़ें, शायद कहीं उजाले की सूरत दिखाई दे तब जान बचे, आह! मैं इन औरतों को ऐसा नहीं समझता था और इस बात का स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी।

लाचार प्रभाकर सिंह अँधेरे में अपने दोनों हाथों को फैलकर टटोलते हुए आगे की तरफ बढ़े मगर बहुत धीरे-धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो। रास्ता पेचीला और ऊँचा था तथा आगे की तरफ से तंग भी होता जाता था। अढ़ाई-तीन सौ कदम जाने के बाद रास्ता इतना तंग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न रही। कुछ आगे बढ़ने पर रास्ता खत्म हुआ और एक बंद दरवाजे पर हाथ पड़ा। धक्का देने से वह दरवाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह जो उनके सामने की तरफ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी। लगभग पच्चीस-तीस कदम जाने के बाद प्रभाकर सिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड़ की ऊँचाई पर किसी गुफा के बाहर खड़ा पाया।

इस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड़ की चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी। प्रभाकर सिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान में पाया जिसे एक सुन्दर और सोहावनी घाटी कह सकते हैं। यह घाटी त्रिकोण अर्थात् तीन तरफ से पहाड़ के अन्दर दबी हुई थी और जमीन के बीचोंबीच में एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस जगह से जहाँ प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचने के लिए रास्ता तलाश करने लगे मगर सुभीते से उतर जाने के लायक कोई पगडंडी नजर न आई, तथापि प्रभाकर सिंह हतोत्साह न हुआ और किसी-न-किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे। वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है, किस ग्रह दशा के फेर में पड़ते हैं, किसका सामना पड़ता है और खाने-पीने के लिए क्या चीज मिलती है अथवा यहाँ से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है। उस बंगले तक पहुँचने में प्रभाकर सिंह को दो घंटे से ज्यादा देर लगी। पहाड़ी की चोटियों पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बंगले के पास अभी धूप का नाम-निशान नहीं था।

बंगले के दरवाजे पर दो ज़वान लड़के पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकर सिंह को रोका और पूछा, "तुम यहाँ क्योंकर आए?"

इसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने क्रोध में आकर कहा, "जिस तरह हम आए हैं वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनों कमबख्त औरतें भी इसी बंगले के भीतर होंगी जिन्होंने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है। तुम जाओ, उन्हें इत्तिला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुँचे।"

उन दोनों पहरेवालों ने प्रभाकर सिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया। प्रभाकरसिंह गुस्से में आकर कुछ कहा ही चहाते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड़ के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी जो इसी बंगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बड़ी खूबसूरती के साथ खड़ा था। इस बंगले के चारों कोनों पर चार मौलसिरी के बडे-बड़े दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे-भरे थे और उनके फूलों से वहाँ की जमीन ढक रही थी तथा खुशबू से प्रभाकर सिंह का दिमाग मुअत्तर हो रहा था।

जिस मौलसिरी के पेड़ के ऊपर प्रभाकर सिंह की निगाह पड़ी उसके ऊपरी हिस्से में रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला लटक रहा था जो झुकी हुई डालियों की आड़ में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटों से उसकी डालियाँ हिलतीं और इधर-उधर हटती थीं तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकर सिंह की निगाह पड़ी थी। गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को इंदुमति का गुमान हुआ और ये दौड़ कर उस पेड़ के नीचे जा खड़े हुए।

प्रभाकर सिंह ने सर उठाकर पुनः उस औरत को देखा इस आशा से कि यह इंदुमति है या नहीं, इस बात का निश्चय कर लें, मगर प्रभाकर सिंह का खयाल गलत निकला क्योंकि वह वास्तव में इंदुमति न थी, हाँ, इंदुमति से उसकी सूरत रुपये में बाहर आना जरूर मिलती-जुलती थी यहाँ तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनों होठ और अपनी ठुड्डी हाथ से ढाँक कर प्रभाकर सिंह की तरफ देखती होती तो दोपहरी की चमकचमाती हुई रोशनी में और दस हाथ की दूरी से भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि जरूर मेरी इंदुमति है।

इस समय वह औरत भी प्रभाकर सिंह की तरफ देख रही थी। जब वे उस पेड़ के नीचे आए तब उसने हाथ के इशारे से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने कहा, "तुम इस बात का गुमान भी करो कि तुम्हारा हाल जाने बिना मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

औरत : **(अपने माथे पर हाथ रख कर)** बात तो अब यह है कि आप अब यहाँ से जा नहीं सकते और न आपको निकल जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी जुबानी मुझे यहाँ का सच्चा-सच्चा हाल मालूम हो जाएगा और मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगा।

औरत : नहीं क्योंकि एक तो मुझे यहाँ का पूरा-पूरा हाल मालूम नहीं, दूसरे अगर कुछ मालूम भी है तो उसके कहने का मौका मिलना कठिन है, क्योंकि अगर कुछ कहने की कोशिश करूँगी तो मेरी ही तरह से आप भी कैद कर लिए जाएँगे।

प्रभाकर सिंह : तो तुम कैदी हो?

औरत : **(आँचल से आँसू पोंछकर)** जी हाँ!!

प्रभाकर सिंह : तुम्हें यहाँ कौन ले आया?

औरत : मेरी बदकिस्मती!

प्रभाकर सिंह : तुम्हारा क्या नाम है?

औरत : तारा

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब से)** तुम्हारे बाप का क्या नाम है?

औरत : **(रोकर)** वही जो आपकी इंदुमति के बाप का नाम है!! अफसोस, आपने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना!

इतना कहके वह और भी खुलकर रोने लगी जिससे प्रभाकर सिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होंने पहिचान लिया कि यह बेशक् उनकी साली है। वह चाहते थे कि पेड़ पर चढ़कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच में कई आदमियों ने आकर उन्हें घेर लिया। बंगले के दरवाजे पर पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने प्रभाकर सिंह को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहाँ से चले गए और थोडी ही देर में कई आदमियों ने

आकर उनको घेर लिया।

5

संध्या का समय था जब नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को बहकाकर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसी सुरंग की राह ले भागा जिधर से वे लोग गए थे। उस समय इंदुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में लिख आए हैं अर्थात् मर्दानी सूरत में तीर-कमान और ढाल-तलवार लगाए हुए थी। संभव था कि नकली प्रभाकर सिंह को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नहीं, उसको इंदुमति से कुछ ऐसा संबंध था कि उसने उसके पहिचानने में जरा भी धोखा नहीं खाया बल्कि इंदुमति को हर तरह से धोखे में डाल दिया। इंदुमति ने प्रभाकर सिंह को वैसे ही ढंग और पोशाक् में पया जैसा छोड़ा था परन्तु यदि वह विकल दुखित और घवड़ाई हुई न होती तो उनके लिए नकली प्रभाकर सिंह को पहिचान लेना कुछ कठिन न था।

सुरंग के बाहर होने बाद आसमान की तरफ देखकर इंदुमति को इस बात का खयाल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है। वह सोचने लगी कि इस भयानक जंगल में क्योंकर पार होंगे और रात-भर कहाँ पर आराम से विता सकेंगे, साथ ही उसे यकायक इसी तरह पर गुलाबसिंह को छोड़ना और भूतनाथ की घाटी से निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था। पूछने पर भी प्रभाकर सिंह ने उसको ठीक-ठीक सबब नहीं बताया था, हाँ बताने का वादा किया, मगर इससे उसकी बेचैनी दूर नहीं हुई थी। उसका जी तरह-तरह के खुटकों में पड़ा हुआ था और यह जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी कि गुलाबसिंह ने उनका क्या नुकसान किया था जो उसको भी छोड़ दिया गया।

सुरंग के मुहाने से थोड़ी दूर आगे जाने बाद इंदुमति ने प्रभाकर सिंह से कहा, "आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं आपका साथ नहीं दे सकती।"

नकली प्रभाकर : **(धीमी चाल करके)** अच्छा लो मैं धीरे-धीरे चलता हूँ मगर जहाँ तक जल्दी हो सके यहाँ से निकल ही चलना चाहिए।

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है, कुछ बताओ भी तो सही?

नकली प्रभाकर : अभी नहीं, थोड़ी देर के बाद इसका सबब बताऊँगा।

इंदुमतिः यही कहते-कहते तो यहाँ तक आ पहुँचे। अच्छा यही बताओ कि हम लोगों को कहाँ जाना होगा और कितना बड़ा सफर करना पड़ेगा?

नकली प्रभाकर : कुछ नहीं, थोड़ी ही दूर और चलना है। इसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ़कर हम लोग निकल जाएँगे।

सवारी का नाम सुन इंदुमति चौंकी और उसके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगी। कई सायत सोचने के बाद उसने पुनः नकली प्रभाकर सिंह से पूछा, "ऐसे मुसीबत के जमाने में यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई?"

नकली प्रभाकर : इसका जवाब भी आगे चलकर देंगे।

प्रभाकर सिंह की इस बात ने इंदुमति को और भी तरद्दुद में डाल दिया। वह चलते-चलते रुककर खड़ी हो गई और इस बीच में नकली प्रभाकर सिंह जो आगे जा रहा था कई कदम आगे निकल गया।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इंदुमति के जी में क्या आया कि वह प्रभाकर सिंह के साथ जाते-जाते एकदम रुक ही नहीं गई बल्कि जब प्रभाकर सिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न करके इंदुमति से कुछ आगे बढ़ गया तो दाहिनी तरफ हटकर एक गुंजान पेड़ पर चढ़ गई और छिपकर इंतजार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या दिखाता है।

नकली प्रभाकर सिंह लगभग दो-सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ़ गया तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इंदुमति नहीं है। वह घबराकर पीछे की तरफ लौटा और "इंदुमति, इंदुमति" कह कर कुछ ऊँचे स्वर से पुकारने लगा।

इंदुमति पेड़ पर चढ़कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी मगर उसे खूब याद था कि उसे प्यारे पति ने आवश्यकता पड़ने पर कभी उसे इंदुमति कहकर नहीं पुकारा। यह एक ऐसी बात थी जो केवल उन दोनों पति-पत्नी ही से संबंध रखती थी, कोई तीसरा आदमी इसके जानने का अधिकारी न था।

नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को पुकारता हुआ उससे ज्यादा पीछे हट गया जहाँ इंदु छिपी हुई थी और इस बीच में उसने तीन दफे जफील **(सीटी)** भी बुलाई, साथ ही इसके यह भी उसके मुँह से निकल पड़ा, "कमबख्त ठिकाने पहुँचकर गायब हो गई!" यह बात इंदुमति ने भी सुन ली।

जफील की आवाज से वहाँ कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभाकर सिंह के साथी बन गये जिन्हें देख इंदुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहाँ आकर सोचा था वही ठीक निकला, वास्तव में उसने पूरा धोखा खाया, और अब वह बेतरह दुश्मनों के काबू में पड़ी हुई है।

इंदुमति को खोजने वाली अब कई आदमी हो गये और वे इधर-उधर फैलकर पेड़ों की आड़ तथा झुरमुट में उसे खोजने लगे।

तिथि के अनुसार रात की पहिली कालिमा **(अँधेरी)** बीत चुकी थी और चन्द्रदेव उदय होकर धीरे-धीरे ऊँचे उठने लगे थे जिससे इंदु घबरा गई और मन में सोचने लगी कि यह तो बड़ा अँधेर हुआ चाहता हैं एक छिपे हुए इंदु को यह अपना-सा किया चाहता है! अब मैं क्या करूँ?"

प्रभाकर सिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत कुछ सिखला दिया था। तलवार चलाना और तीर का निशाना लगाना वह बखूबी जानती थी, बल्कि तीरंदाजी में उसे एक तरह का घमंड था और इस समय उसके पास यह सामान मौजूद भी था। जैसा कि हम ऊपर इशारा कर चुके हैं कि 'इस समय इसकी पोशाक् और सूरत वैसी ही थी जैसी कि हम पहिले बयान में दिखा चुके हैं।'

जब कई दुश्मनों ने इंदुमति को घेर लिया और चाँदनी भी फैल कर वहाँ की हर एक चीज को दिखाने लगी तब उसे विश्वास हो गया कि अब वह किसी तरह छिपी नहीं रह सकती, लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार कर लेंगे। अतएव उसने कमान पर तीर चढ़ाया और संभलकर बैठ गई, सोच लिया कि जब तक तरकश में एक भी तीर मौजूद रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूँगी।

इसी बीच में मौका पाकर उसने नकली प्रभाकर सिंह को अपने तीर का निशाना बनाया। इंदु के हाथ से निकला हुआ तीर नकली प्रभाकर सिंह के पैर में लगा और वह, "हाय" करके बैठ गया। उसके साथी उसके चारों तरफ जमा हो गए और बोले, "बेशक् वह इसी जगह कहीं है और यह तीर उसी ने मारा है। अब उसे हम जरूर पकड़ लेंगे। तीर पूरब तरफ से आया है!"

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेद कर छाती की तरफ से पार निकल गया।

अब तो उन लोगों में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती रही बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई, मगर इस खयाल से कि तीर पूरब तरफ से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ होगाा, दोनों व्यक्तियों को छोड़कर बाकी के लोग इंदु की तरफ झपटे और चाँदनी की मदद पाकर बहुत जल्दी उस पेड़ को घेर लिया जिस पर इंदु छिपी हुई थी।

अब इंदु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊँची आवाज में उसने दुश्मनों से कहा, "हाँ, हाँ बेशक् मैं इसी पेड़ पर

हूँ, मगर याद रखो कि तुम लोगों को अपने पास आने न दूँगी वल्कि देखते ही देखते इस दुनिया को उठा दूँगी।"

इतना कहकर उसने पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर से घायल किया। इसी समय ऊपर की तरफ से आवाज आई, "शाबाश इंदु, शावाश! इन लोगों की वातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इंदुमति है!"

यह बोलने वाला भी उसी पेड़ पर था जिस पर इंदु थी मगर उससे ऊपर की एक ऊँची डाल पर बैठा हुआ जिसकी आवाज सुन कर इंदुमति घवड़ा गई और सोचने लगी कि यह कोई दुश्मन तो नहीं है! उसने पूछा, "तू कौन है और यहाँ कब से बैठा हुआ है?"

जवाब : मैं तुमसे थोड़ी देर पहिले यहाँ आया हूँ वल्कि यों कहना चाहिए कि दूर से तुम लोगों को आते देखकर इस पेड़ पर चढ़ बैठा था, मैं तुम्हारा पक्षपाती हूँ और मेरा नाम भूतनाथ है। तुम तीर-कमान मुझको दो, मैं अभी तुम्हारे दुश्मनों को जहन्नमुम में पहुँचा देता हूँ।

इंदुमति : बस-बस-बस, मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूँ कि इस समय तुम्हारी वातों पर विश्वास कर लूँ जो अपना तीर-कमान, जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हूँ। तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड़ दूँ। यद्यपि मैं औरत हूँ और मेरी कमान कड़ी नहीं है तथा मेरे फेंके तीर दूर तक नहीं जाते, तथापि मेरा निशाना नहीं चूक सकता और मैं नजदीक के दुश्मनों को बच कर नहीं जाने दे सकती। खैर तुम जो कोई भी हो समझ रखो कि इस समय मैं तुम्हारी वातों पर विश्वास न करूँगी और तुम्हें कदापि नीचे न उतरने दूँगी, जरा भी हिलोगे तो मैं तीर मारकर तुम्हें दूसरी दुनिया में पहुँचा दूँगी।

इतने ही में नीचे कोलाहल बढ़ा और इंदुमति ने तीर मारकर और एक आदमी को गिरा दिया। फिर ऊपर से आवाज आई "शाबाश इंदु शावाश! तू मुझे नीचे उतरने दे, फिर देख मैं तेरे दुश्मनों से कैसा बदला लेता हूँ!"

इंदुमति : कदापि नहीं, मैं अपने दुश्मनों से आप समझ लूँगी।

आवाज : और जब तुम्हारे तीर खत्म हो जाएँगे तब तुम क्या करोगी?

इंदुमति : मेरे तीरों की गिनती दुश्मनों की गिनती से वहुत ज्यादा है, तुम इसकी चिंता मत करो और चुपचाप बैठे रहो।

आवाज : नहीं इंदु नहीं, तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे दुश्मन यहाँ बहुत ज्यादा हैं। थोड़ी देर में वे सब इकट्ठे हो जाएँगे और तव तुम्हारे तीरों की गिनती कुछ काम न करेगी।

इंदुमति : ऐसी अवस्था में तुम्हीं क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकाबला करके नीचे नहीं उतर सकते! खबरदार! व्यर्थ की बकवास करके मेरा समय नष्ट न करो!!

फिर नीचे कोलाहल बड़ा और इंदुमति के तीर ने पुनः एक आदमी का काम तमाम किया। इंदु के ऊपर की तरफ बैठा हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और बोला, "खबरदार इंदु, मुझ पर तीर न चलाइए और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हूँ और अब नीचे उतरे विना नहीं रह सकता!"

इंदुमति : मैं जरूर तीर मारूँगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहिजा न करूँगी।

इतना कहकर इंदु ने उसकी तरफ तीर सीधा किया मगर घवड़ाकर दिल में सोचने लगी कि कहीं वह भूतनाथ ही न हो। उसी समय किसी हर्वे की चमक उसकी आँखों में पड़ी और उसकी तेज अक्ल ने तुरन्त समझ लिया कि यह वरछी है जिससे कुछ आगे वढ़कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा, अस्तु दिल कड़ा करके इंदु ने उस पर तीर चला ही दिया जो कि उसके मोढ़े में लगा, मगर इस चोट को सहकर और कुछ नीचे उतरकर उसने इंदु पर वरछी का वार किया, साथ ही इंदु का दूसरा तीर पहुँचा जो कि न मालूम कहाँ लगा कि वह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और वेहोश हो गया। परन्तु

उसकी बरछी का वार भी खाली नहीं गया। इंदु के जंघे में चोट आई। खून का तरारा बह चला और दर्द से वह बेचैन हो गई। कुशल हुआ कि वह बखूबी इंदु के पास नहीं पहुँचा था। अंदाज से कुछ दूर ही था इसलिए बरछी की चोट भी पूरी न बैठी, और कुछ और नजदीक आ गया होता तो इंदु भी पेड़ पर न ठहर सकती, जरूर नीचे गिर पड़ती।

इंदु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था। यद्यपि इस समय वह दुश्मनों से घिरी हुई थी और बचने की आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सम्हाला और दुश्मनों को अपने पास फटकने न दिया। पेड़ पर से जिस आदमी ने इंदु को जख्मी किया था, इंदु के हाथ से जख्मी होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालों में खलबली मच गई। सभी ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा। एक ने कहा, "यह तो भूतनाथ है!" दूसरे ने कहा, "फिर इंदु ने इसे क्यों मारा!"

इत्यादि बातें होने लगी जो इंदु के दिल में तरह-तरह का खुटका पैदा करने वाली थीं मगर उसने उसकी कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी। ग्यारह दुश्मनों में से सात को उसने जख्मी किया जिसमें उसके बारह तीर खर्च हुए मगर चार-पाँच दुश्मनों ने बड़ी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर ढाल रख के इंदु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगे। इंदु ने पुनः तीर मारना आरम्भ किया मगर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि उसके चलाए हुए तीर अब ढाल पर टक्कर खाकर बेकार हो जाते थे।

अब इंदु का कलेजा धड़कने लगा। वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था, पेड़ पर चढ़ने वाले बड़े ही कट्टर और लड़ाके आदमी थे अतएव उन्होंने इंदु के तीरों की कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुँचकर उसे गिरफ्तार करने पर ही तुल गए। ऐसी हालत देख इंदु ने भी अपने को उनके हाथ में फँसने की बनिस्बत जान दे देना अच्छा समझा। वह लुढ़ककर पेड़ के नीचे गिर पड़ी और सख्त चोट खाकर बेहोश हो गई।

6

जब इंदु होश में आई और उसने आँखें खोलीं तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पड़े पाया और मय सामान कई लौंडियों की खिदमत के लिए हाजिर देखकर ताज्जुब करने लगी।

आँख खुलने पर इंदु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे अब हकीमिन जी के नाम से संबोधन करती थी और जिसके विषय में जाना गया कि वह इंदुमति का इलाज कर रही है।

निःसन्देह इंदुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी बहुत कठिन हो रहा था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनों के हाथ में फँस गई, परन्तु उस समय जितनी औरतें वहाँ मौजूद थीं, सभी खूबसूरत, कमसिन, खुशदिल, हँसमुख और हमदर्द मालूम होती थीं। सभी को इस बात की फिक्र थी कि इंदुमति शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे। सभी प्यार के साथ उसकी खिदमत करती थीं, दिल बहलाने की बातें करती थीं, और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछतीं कि 'कहो बहन, मिजाज कैसा है? अब तुम किसी बात की चिंता न करो, यह घर तुम्हारे दुश्मनों का नहीं है बल्कि दोस्तों का है जो कि बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा कि दुश्मनों के हाथों से तुम किस तरह छुड़ा ली गई। जरा तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाय तो मैं सब रामकहानी कह सुनाऊँगी, तुम किसी तरह की चिंता न करो'! इत्यादि!

इन बातों से मालूम होता था कि ये सब-की-सब लौंडी ही न थी बल्कि अच्छे खानदान की लड़कियाँ थीं और दो-एक तो ऐसी थीं जो बराबरी का **(बल्कि उससे भी बढ़कर होने का)** दावा रखती थीं।

यह सब कुछ था परन्तु इंदुमति को इस बात ठीक पता नहीं लगता था कि वह वास्तव में दुश्मनों की मेहमान है या दोस्तों की। यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थीं, उसकी खातिरदारी की जाती थी, उसे भरोसा दिलाया जाता था और जिससे वह खुश हो, वह करने के लिए सब तैयार रहती थीं, यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा नहीं होता था।

इसी तरह समय बीतता गया और इंदु की तबीयत सम्हलती गई। उसे होश में आये आज तीसरा दिन है, दर्द में भी बहुत कमी है और वह दस-बीस कदम टहल भी सकती है। आज ही उसने कुछ थोड़ा-बहुत भोजन भी लिया है और इस फिक्र में तकिए का सहारा लगाए बैठी है कि आज किसी-न-किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूँगी कि वास्तव में मैं किसके कब्जे में हूँ।

उसकी खातिर करने वालियों में दो औरतें ऐसी थीं जिन पर इंदु का भरोसा हो गया था और जिन्हें इंदु सबसे बढ़कर उच्च कुल की नेक और होनहार समझती थी। एक का नाम कला और दूसरी का नाम बिमला था। सबसे ज्यादे ये ही दोनों इंदु के साथ रहा करती थीं।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी। चिंता निमग्न इंदु अपनी चारपाई पर लेटी हुई तरह-तरह की बातें सोच रही थीं। उसी के पास दो चारपाइयाँ और बिछी हुई थीं जो कला और बिमला के सोने के लिए थीं। कला अपनी चारपाई पर नहीं बल्कि इंदु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाये बैठी हुई थी मगर बिमला अभी तक यहाँ आई न थी। कई सायत तक सन्नाटा रहने के बाद इंदु ने बातचीत शुरू की।

इंदुमति : कला, कुछ समझ नहीं आता कि तू मुझसे यहाँ का भेद क्यों छिपाती है और साफ-साफ क्यों नहीं कहती कि यह किसका मकान है?

कला : बहिन, मैं जो तुमसे कह चुकी कि यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त का है तो फिर क्यों तरद्दुद करती हो?

इंदुमति : तो क्या मैं अपने दोस्त का नाम नहीं सुन सकती? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है?

कला : छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहाँ का हाल सुनकर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुःख होगा और हकीमिन जी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रंज हो।

इंदुमति : यह कोई बात नहीं है, अगर है तो हकीमिनजी का केवल नखरा है और तुम लोगों का बहाना।

कला : अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं वह सब हाल कह दूँगी, मगर शर्त यह है कि सिवाय बिमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था।

इंदुमति : नहीं-नहीं, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अपनी जुबान से किसी से भी कुछ न कहूँगी।

कला : अच्छा तो कुछ रात बीत जाने दो और बिमला को भी आ जाने दो।

इतने ही में बिमला ने भी चौखट के अन्दर पैर रखा!

इंदुमति : लो बिमला भी आ गई।

कला : अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो!

बिमला : **(कला के पास बैठ कर)** क्या बात है?

कला : **(धीरे से)** ये यहाँ का हाल जानने के लिए बेताब हो रही हैं।

बिमला : इनका बेताब होना उचित ही है मगर **(इंदु की तरफ देख के)** आप तंदुरुस्त हो जातीं तब इसे पूछतीं तो अच्छा था नहीं तो..

इंदुमति : यही हठ तो और भी उत्कंठित करती है।

बिमला : सुनने से आपको जितनी खुशी होगी उससे ज्यादे रंज होगा।

इंदुमति : बला से, जो होगा देखा जाएगा! मगर **(उदासी से)** तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि..

बिमला : **(इंदु का हाथ प्रेम से दबाकर)** बहिन, मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगी, कहूँगी और जरूर कहूँगी।

इंदुमति : तो फिर कहो।

बिमला : अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस बात को कभी दोहराना मत।

इंदुमति : कदापि नहीं।

बिमला : अच्छा खैर...यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका **(बाप का घर)** छोड़े कितने दिन हुए?

इंदुमति : **(कुछ सोच के)** लगभग एक वर्ष और सात महीने के हुए होंगे, शादी भई और मायका छूटा। तब से आज तक दुःख-ही-दुःख उठाती रही। मैं अपनी माँ और मौसेरी बहिनों को फूट-फूट कर रोती हुई छोड़ कर पति के साथ रवाना हुई थी, वह दिन कभी भूलने वाला नहीं।

इतना सुनते ही कला और बिमला की आँखों में आँसू आ गये।

बिमला : **(आँसू पोंछ कर)** मुझे भी वह दिन नहीं भूलने का!

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** बहिन, तुम्हें वह दिन कैसे याद है, तुम वहाँ कहाँ थीं?

बिमला : मैं थी और जरूर थी, बल्कि हम दोनों बहनें **(कला की तरफ इशारा करके)** वहाँ थीं।

इंदुमति : सो कैसे, कुछ कहो भी तो।

बिमला : बस इतना ही तो असल भेद है, सब बातें इसी से संबंध रखती हैं। **(धीरे से)** तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिनें हम दोनों कला और बिमला के नाम से आज साल-भर से यहाँ निवास करती हैं। यद्यपि देखने में हर तरह से सुख भोग रही हैं मगर वास्तव में हमारे दुःख का कोई पारावार नहीं!

इंदुमति : **(बड़े ही आश्चर्य से)** यह तो तुम ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता! यद्यपि तुम दोनों की उम्र वही होगी, चाल-ढाल, बातचीत सब उसी ढंग की है, मगर सूरत-शक्ल में जमीन-आसमान का फर्क है, ओह! नहीं, यह कैसे हो सकता है। मुझे कैसे विश्वास हो सकता है?

बिमला : **(मुसकराकर)** हम दोनों की सूरत-शक्ल में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा। मैं सहज ही में विश्वास दिला दूँगी कि जो कुछ कहती हूँ वह बाल-बाल सच है। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें अभी बता देती हूँ।

इतना कहकर बिमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दरवाजे बंद कर दिए।

इंदु जबसे यहाँ आई है तबसे इसी कमरे में है, उसे इसके बाहर का हाल कुछ भी मालूम नहीं है, वह नहीं जानती कि इस कमरे के बाहर कोठरी है या दालान, बारहदरी है या सायबान, पहाड़ है या बियाबान। होश में आने के बाद उसमें अभी बाहर निकलने की ताकत ही नहीं आई। हाँ, इसके भीतर की तरफ दो कोठरी, एक पायखाना और एक नहाने का घर है, इन्हें इंदु जरूर जानती है क्योंकि इन कोठरियों से उसे वास्ता पड़ चुका है।

बिमला इंदु के पास से उठकर दरवाजा बंद करने के बाद उसी नहाने वाली कोठरी में चली गई और थोड़ी ही देर में लौटकर मुसकराती हुई इंदु के पास आई और बोली, "अब तुम मुझे गौर से देखो और पहचानो कि मैं कौन हूँ!"

यद्यपि इंदु बीमार, कमजोर और हतोत्साह थी तथापि बिमला की नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठकर गले से लिपट गई।

बिमला : बस समझ लो कि इसी तरह कला भी सूरत बदले हुए हैं। हम दोनों बहनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन के लिए सूरत बदल कर ग्रहदशा के दिन काट रही हैं। जब तक कमबख्त भूतनाथ से बदला न ले लेंगी तब तक..

इंदुमति : **(बिमला को छोड़ कर)** अहा! मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना, सरस्वती को देखूँगी, मगर भूतनाथ..

कला : **(बिमला से)** बस बहिन, अब बातें पीछे करना पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली[1] को चढ़ाकर बिमला बन जाओ, दरवाजे खोल दो और आराम से बातें करो।

विमला उठी और पुनः उसी कमरे में जाकर अपनी सूरत पहिले जैसी बनाकर लौट आई। काम केवल इतना ही था कि एक अद्भुत झिल्ली जो अपने चेहरे से उतारी थी फिर चढ़ाकर जैसी-की-तैसी बन बैठी। कला ने कमरे के दरवाजे खोल दिए और आराम के साथ बैठकर फिर तीनों बातचीत करने लगीं।

इंदुमति : बहिन, तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुई, अब तुम अपना हाल कह जाओ और यह बताओ कि यह मकान किसका है, मेरी मौसी का या मेरी माँ का!

बिमला : दोनों में किसी का भी नहीं।

इंदुमति : (ताज्जुब से) तो क्या तुम दोनों लावारिस हो गईं? कोई तुम्हारा मालिक नहीं रहा?

बिमला : रहा और नहीं भी रहा!

इंदुमति : सो कैसी बात? यह मैं जानती हूँ कि दयारामजी के मरने से तुम दोनों विधवा हो गईं क्योंकि भाग्यवश दोनों बहिनें एक ही साथ ब्याही गई थीं फिर भी हम लोगों के माँ-बाप ऐसे गए-गुजरे नहीं कि हम लोग लावारिस समझी जायें।

बिमला : **(अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर)** नहीं लावारिस तो नहीं हैं मगर अभागी और दैव की सताई हुई जरूर हैं। हम दोनों बहिनों को मालूम हो गया कि हमारे निर्दोष पति को गदाधरसिंह ने मारा है और बस यही जान लेना हमारी इस ग्रहदशा का कारण है।

इंदुमति : **(चौंककर)** हैं! कौन गदाधरसिंह?

बिमला : वही जो हमारे ससुर का ऐयार और हमारे पति का दिलीदोस्त कहलाता है।

इंदुमति : **(बड़े ही आश्चर्य से)** यह बात तबीयत में नहीं जमती। ऐयारी के फन से यह बिलकुल ही विरुद्ध है। ऐयार चाहे कैसा ही बेईमान क्यों न हो मगर मालिक के साथ ऐसा फरेब कभी नहीं करेगा और गदाधरसिंह तो एक नेक ऐयार गिना जाता है, एक दफे मैंने भी उसकी सूरत देखी है।

बिमला : बहिन, बेशक् ऐसा ही है। यद्यपि अभी किसी को इस बात की खबर नहीं है, यहाँ तक कि मेरे माँ-बाप और ससुर को भी इस बात का विश्वास नहीं हो सकता मगर मुझे तो जो कुछ पता लगा है वह यही है और बहुत ठीक भी है।

कला : और इतना भी मैं कहूँगी कि मेरे ससुर को भी इस बात का शक जरूर हो गया, खास करके तबसे जबसे गदाधरसिंह ने अपना काम या हमारे यहाँ का रहना एक प्रकार से छोड़ दिया है, यद्यपि हमारे ससुर इस विचार को प्रकट नहीं करते।

बिमला : इस समय वही गदाधरसिंह तुम्हारा रक्षक बना है और भूतनाथ के नाम से तुम्हारे साथ दोस्ती दिखलाता है, मगर हम दोनों कब उस पर विश्वास करने लगीं!

इंदुमति : **(चौंक कर)** हैं!! क्या वही गदाधरसिंह भूतनाथ बना है?

बिमला : हाँ वही भूतनाथ है जिसके फँदे से बचाकर मैं तुमको यहाँ ले आई।

कला : बहिन, हम दोनों वे बातें जानती हैं जो अभी दुनिया में किसी को मालूम नहीं हैं या अगर मालूम हैं भी तो केवल दो ही चार आदमियों को।

बिमला : मैं भी भूतनाथ को वह मजा चखाऊँगी कि उसे नानी याद आ जाएगी और वह समझ जाएगा कि दुनिया में औरतें कहाँ तक कर सकती हैं।

इंदुमति : तुम्हारी बातों ने तो मुझे पागल बना दिया! मैं वे बातें सुन रही हूँ जिसके सुनने की आशा न थी। तो तुम यह भी कहोगी कि गुलाबसिंह ने भी हम लोगों के साथ दग़ा की और जान-बूझकर हम दोनों को भूतनाथ के हवाले कर दिया?

बिमला : कौन गुलाबसिंह?

इंदुमति : वही गुलाबसिंह, भानुमति वाला।

बिमला : **(कुछ सोचकर)** इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा हाल कुछ भी नहीं सुना। मैं नहीं जानती कि तुम क्योंकर घर से निकलीं, तुम पर क्या आफतें आईं, और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ क्या सलूक किया। तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वह बड़ा नेक और ईमानदार आदमी है तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर हैं यदि वह मानें। यों तो आदमी का ईमान बिगड़ते कुछ देर नहीं लगती क्योंकि आदमी का शैतान हरदम आदमी के साथ रहता है।

इंदुमति : ठीक है, अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊँगी मगर पहिले यह सुन लूँ कि क्योंकर यहाँ आई हो क्योंकर तुमने मुझे दुश्मनों के हाथ से बचाया है।

बिमला : हाँ-हाँ, मैं कहती हूँ सुनो। अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनों को जानती हो जिनके हाथ में फँसी थीं?

इंदुमति : नहीं, बिलकुल नहीं।

बिमला : वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे!

इंदुमति : ओफ ओह, जिसके खौफ से हम लोग भागे हुए थे! मगर अभी तुम कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के हाथ से बचाया है।

बिमला : हाँ, बेशक् वैसा भी कह सकते हैं क्योंकि भूतनाथ तो हम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन ठहरा, मगर इधर तुम शिवदत्त ही के आदमियों के हाथ में फँसी थीं। इत्तिफाक से हम लोग भी उसी समय वहाँ जा पहुँचे और लड़-भिड़ कर उन लोगों के हाथ से तुम्हें छुड़ा लाए। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** तुममें इतनी ताकत कहाँ से आ गई कि उन लोगों से लड़ कर मुझे छुड़ा लाईं?

बिमला : **(मुसकुराती हुई)** हाँ इस समय मुझमें इतनी ताकत है। मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस-पच्चीस सिपाही भी रखती हूँ।

इंदुमति : तो ये सब तुम्हारे बाप या ससुर के नौकर होंगे? जरूरत पड़ने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पड़ती होगी?

विमला : **(एक लंबी साँस लेकर)** नहीं बहिन, ऐसा नहीं है। हम दोनों अपने घर और ससुराल से मंजिलों दूर पड़े हुए हैं। हम लोगों की किसी को कुछ खबर ही नहीं बल्कि यों कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नातेदारों के खयाल से हम दोनों बहिनें मर चुकी हैं और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नहीं।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** तुम्हारी बातें तो बड़ी ही विचित्र हो रही हैं। अच्छा तो तुम यहाँ किसके भरोसे पर बैठी हो और तुम्हारा मददगार कौन है?

बिमला : यह बहुत ही गुप्त बात है, तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना। मैं यहाँ इन्द्रदेव के भरोसे पर हूँ। वही मेरे मददगार हैं और यह उन्हीं का स्थान है। वही मेरे बाप हैं, वही मेरे ससुर हैं, और इस समय वहीं मेरे पूज्य इष्टदेव हैं!

इंदुमति : कौन इन्द्रदेव?

बिमला : वही तिलिस्मी इन्द्रदेव! मेरे ससुर के सच्चे मित्र!!

इंदुमति : **(सिर हिला कर)** आश्चर्य! आश्चर्य!! और तुम्हारे ससुर को इस बात की खबर नहीं है।

बिमला : हाँ बिलकुल नहीं है।

इंदुमति : यह कैसी बात है?

बिमला : ऐसी ही बात है। मैं जो कह चुकी कि उन लोगों के खयाल से हम दोनों इस दुनिया में नहीं है।

इंदुमति : आखिर उन्हें इस बात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सरस्वती मर गईं?

बिमला : सो मैं नहीं जानती क्योंकि यह कार्रवाई इन्द्रदेव जी की है, मैं सूर्यमासी **(इन्द्रदेव की स्त्री)** के यहाँ न्यौते में आई थी, उसी जगह उन्होंने **(इन्द्रदेव ने)** मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया। मालूम होते ही मेरे तन-बदन में आग-सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि 'भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूँगी।' **(एक लंबी साँस लेकर)** गुस्से से प्रतिज्ञा तो कर गई मगर अब विचारा तो कहाँ मैं और कहाँ भूतनाथ। पहाड़ और राई का मुकाबला कैसा? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव के पैरों पर गिर पड़ी और बोली कि 'मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपकी है, बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण दे देना पड़ेगा' इत्यादि।

इन्द्रदेव को भी इस अनुचित घटना का बड़ा दुःख था परन्तु मेरी उस अवस्था ने उन्हें और दुःखित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करना उन्होंने आवश्यक और धर्म समझ लिया। बस फिर क्या था, मेरे मन की भई! जैसा कि मैं चाहती थी उससे बढ़कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ़कर इस दुनिया में मुझे कोई मदद दे ही नहीं सकता। खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊँगी, मुख्तसर यह है कि उन्होंने हर प्रकार की मदद करने का बंदोबस्त करके हम दोनों को समझाया कि अब किसी तरह की जिंदगी हम दोनों को अख्तियार करनी चाहिए।

सबसे पहिले इन्द्रदेव जी ने यही बताया कि 'प्रकट में तुम दोनों बहिनों को इस दुनिया से उठ जाना चाहिए अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ-ही-साथ और सभी को यह मालूम हो जाना चाहिए कि जमना और सरस्वती मर गईं। यह बात मुझे पसन्द आई। आखिर इन्द्रदेव ने हम दोनों की सूरत बदलकर रहने और अपना काम करने का बंदोबस्त करके न मालूम हमारे रिश्तेदारों को कैसे क्या समझा दिया और क्योंकर विश्वास दिला दिया कि सब कोई हमारी तरफ से निश्चिन्त हो गए। उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहाँ कला और बिमला के नाम से रहती हैं। जो लोग हमारे साथ हैं वे सब इन्द्रदेव जी के अदमी हैं मगर उनको भी यह नहीं मालूम है कि हम दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं!

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** क्या तुम्हारे घर में जितने आदमी हैं उनमें से किसी को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नहीं है?

बिमला : किसी को भी नहीं।

इंदुमति : तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगों को क्या समझाया है?

बिमला : मैंने यही किसी को भी नहीं कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो, केवल यही कहा कि तुम्हें भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है। अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहाँ रहो और अपने दुश्मनों से बदला लो, हम लोगों का बाकी हालचाल तुम्हें आप ही धीरे-धीरे मालूम हो जाएगा।

इंदुमति : ठीक है, और जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूँगी, मगर **(सिर झुका कर)** मेरे पति का मुझसे..

बिमला : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, उनके बारे में तुम कुछ भी चिंता मत करो, आज मैं उनको तुम्हें जरूर दिखा दूँगी और फिर ऐसा बंदोबस्त करूँगी कि तुम दोनों एक साथ

इंदुमति : **(प्रसन्न होकर)** इससे बढ़ कर मेरे लिए और कोई दूसरी बात नहीं हो सकती, मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहाँ हैं?

बिमला : (मुसकुराती हुई)

इस समय वे मेरे ही घर में हैं और मेरे कब्जे में हैं।

इंदुमति : **(घबड़ाकर)** यह कैसी बात? अगर यहीं हैं तो मुझे दिखाओ।

बिमला : मैं दिखाऊँगी, मगर जरा रुकावट के साथ।

इंदुमति : सो क्यों?

बिमला : **(कुछ सोच कर)** अच्छा चलो पहिले मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूँ फिर सलाह-विचार करके जैसा होगा देखा जाएगा। मगर इस सूरत में मैं तुम्हें उनके सामने न ले जाऊँगी।

इंदुमति : सो क्यों?

बिमला : तुम अपनी सूरत बदलो और इस बात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊँ तो चुपचाप देख लेने के सिवाय उनके सामने एक शब्द भी मुँह से निकालोगी।

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है?

बिमला : सबब पीछे बताऊँगी।

इंदुमति : अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मंजूर है।

"अच्छा लो मैं बंदोबस्त करती हूँ।" यह कहकर बिमला उठी और कुछ देर के लिए कमरे के बारह चली गई। जब लौटी तो उसके हाथ में एक छोटी-सी संदूकड़ी थी। उसी में से सामान निकालकर उसने इंदुमति की सूरत बदली और वैसी ही एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढ़ाई जैसी आप पहिरे हुए थी। जब हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तब हाथ का सहारा देकर उसने इंदु को उठाया और कमरे के बाहर ले गई।

कमरे के बाहर एक दालान था जिसके एक बगल में तो ऊपर की मंजिल में चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं तथा उसी के बगल में नीचे उतर जाने की रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ बगल में सुरंग का मुहाना था मगर उसमें मजबूत दरवाजा लगा हुआ था। इंदु को उसी सुरंग में बिमला के साथ जाना पड़ा।

सुरंग बहुत छोटी थी, तीस-पैंतीस कदम जाने के बाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहाँ से सुबह की सफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दिखाई दे रही थी। जब इंदुमति वहाँ हद पर पहुँची तब उसकी आँखों के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा बंगला था जिसका हाल हम इस भाग के चौथे बयान में लिख आए हैं या यों कहिए कि जहाँ पर एक पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर प्रभाकर सिंह ने तारा को बैठा देखा था।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर बंगला जिसके चारों कोनों पर मौलसिरी **(मालश्री)** के पेड़ थे इंदुमति की आँखों के

सामने था जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी बल्कि यों कहना चाहिए कि वहाँ की सुंदरता और कुदरती गुलबूटों ने इंदु की निगाह पड़ने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ ही प्रभाकर सिंह की याद ने आँसू बनकर निगाह के आगे पर्दा डाल दिया।

आँखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकर सिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारों तरफ कुदरती सुन्दर पौधे और खुशरंग फूलों के पेड़ बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खींच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी-ताजी किरणें पड़ रही थीं।

आह, प्रभाकर सिंह को देखकर इंदुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है। वह कुछ देर तक एकटक उनकी तरफ देखती रही। न तो वहाँ से नीचे की तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहाँ तक क्योंकर पहुँच सकेगी, अस्तु वह बैचेन होकर घूमी और यही कहती हुई बिमला के गले से लिपट गई कि 'बहिन, तुम बेशक् तिलिस्म की रानी हो गई हो'!

बिमला : बहिन, घबड़ाओ मत, जरा गौर से देखो तो..

इंदुमति : **(बिमला को छोड़ कर)** तो क्या जो कुछ मैं देख रही हूँ केवल भ्रम है?

बिमला : नहीं, ऐसा नहीं है।

इंदुमति : तो फिर यह स्थान किसका है?

बिमला : इस समय तो मेरा ही है।

इंदुमति : तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं?

बिमला : बेशक्।

इंदुमति : कब से?

बिमला : कई दिनों से, या यों कहो कि जबसे तुम आई हो उससे भी पहिले

इंदुमति : **(आश्चर्य, दुःख और क्लेश से)** तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा, ऐसा क्यों?

बिमला : इसके कहने का मौका ही कब मिला! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकूँ, इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं। जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं दिया चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है, फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर..

इंदुमति : **(जोर देकर)** नहीं बहिन! ऐसी भला क्या बात है, उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी!

बिमला : सब कुछ खबर है, इसी वास्ते मैं उन्हें यहाँ लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहिले ही दिन, जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद यह है कि वे **(प्रभाकर सिंह)** तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गईं जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा।

इंदुमति : **(आश्चर्य से)** सो कैसी बात? तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था?

बिमला : हाँ ऐसा ही है। **(हाथ का इशारा करके)** बस इसी घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब-करीब मिलता-जुलता है। भूतनाथ की घाटी में जाने के लिए जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक रास्ता हमारे यहाँ भी जाने के लिए है। इसके अतिरिक्त यहाँ आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग आया-जाया करते हैं। जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी।

इंदुमति : फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया?

इसके जवाब में बिमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकर सिंह को सुरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे-पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकर सिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे बिमला और कला यही दोनों बहिनें थीं और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इंदुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुनकर इंदुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली

इंदुमति : अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हें खबर भी है या नहीं?

बिमला : कुछ-कुछ खबर है! तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं छोड़ते।

इंदुमति : तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया?

बिमला : हाँ, भेद छिपा रखने की कसम खिलाकर मैंने उन्हें बतला दिया कि हम दोनों बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति के घातक हैं, गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इंदुमति : अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो, देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते।

बिमला : मुझे इसमें कोई उज्र नहीं है मगर तुम हरएक बात को अच्छी तरह सोच-विचार लो।

इंदुमति : **(जोर देकर)** कोई परवाह नहीं, तुम वहाँ चलो, **(कुछ सोचकर)** मगर मैं अपनी असली सूरत में उनके सामने जाऊँगी!

बिमला : जैसी तुम्हारी मर्जी, चलो पीछे की तरफ लौटी, एक सुरंग के रास्ते पहिले **(उँगली का इशारा करके)** उस बीच वाले बंगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

7

प्रभाकर सिंह को इस घाटी में आए यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी बात की उन्हें तकलीफ नहीं हुई। नहाने-धोने, खाने-पीने, सोने-पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इंदु के लिए वे बहुत ही बेचैन और दुखी हो रहे थे। जिस समय वे उस घाटी में आये थे उस समय वे बल्कि उसके दो-तीन घंटे बाद तक वे बड़े ही फेर और तरद्दुद में पड़े रहे क्योंकि कला और विमला ने उनके साथ बड़ी दिल्लगी की थी, मगर इसके बाद उनकी घबराहट कम हो गई जब कला और विमला ने उन्हें बता दिया कि वे दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं।

पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोड़ी देर के लिए बड़े ही धोखे में डाला। जब उन्हें पेड़ पर चढ़ने का इरादा किया तो वहाँ पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने गड़बड़ मचा दिया। दौड़ते हुए और कई आदमियों को बुला लाए जिन्होंने प्रभाकर सिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नहीं दी और न कोई कड़ी बात ही कही।

दोनों नौजवान लड़कों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहाँ इकट्ठे हो गए थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्हीं दोनों नौजवान सिपाहियों के बराबर थे जिन्हें देख प्रभाकर सिंह ताज्जुब करने लगे और विचारने लगे कि क्या वे लोग वास्तव में मर्द हैं?

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकर सिंह की आँखें लाल हो गईं मगर जब कुछ सोचने-विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि ये सब मर्द नहीं औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और उन सभों की इच्छानुसार वे उस बंगले के अन्दर चले गए जिसमें छोटे-बड़े सब मिलाकर ग्यारह कमरे थे।

बीच वाले बड़े कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ था। वहाँ पहुँचने के साथ ही बिमला पर उनकी निगाह पड़ी और वे पहिचान गए कि मुझे भुलावा देकर यहाँ लाने वालियों में से यह भी एक औरत है जो बड़ी ढिठाई के साथ इस अनूठे ढंग पर इस्तकबाल कर रही है।

प्रभाकर सिंह ने बिमला से कहा, "मालूम होता है कि यह मकान आप ही का है!"

बिमला : जी हाँ समझ लीजिए कि आप ही का है।

प्रभाकरसिंह : अच्छा तो मैं पूछता हूँ कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा बर्त्ताव क्यों किया?

बिमला : मैंने आपके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि सच तो यों है कि आपको एक भयानक खोटे बेईमान और झूठे ऐयार के पंजे से बचाने का उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम करके आपके साथ नहीं कर सकता था। अफसोस, आपको तो हम उसके फंदे से निकाल लाए मगर बेचारी इंदु फँसी रह गई जिसे बचाने के लिए हम लोग तन-मन-धन सभी अर्पण कर देंगे।

प्रभाकर सिंह : इसमें कोई सन्देह नहीं कि इंदु के लिए मुझे बहुत बड़ी चिंता है और मैं यह नहीं चाहता कि वह किसी अवस्था में भी मुझसे अलग हो, मगर मैं इस बात का कभी विश्वास नहीं कर सकता कि भूतनाथ हम लोगों के साथ खोटा बर्त्ताव करेगा। मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ जिसने उसकी बड़ी तारीफ मुझसे की थी।

बिमला : नहीं, ऐसा नहीं है, वह..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** तुम्हारी बात मान लेना सहज नहीं है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की! **(क्रोध की मुद्रा से)** बेशक् तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इंदु को मुझसे जुदा करके एक आफत में डाल दिया! क्या जाने इस समय उस

पर क्या बीत रही होगी!! हाँ, कहाँ है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैंने यह कष्ट उठाया! क्या अब वह अपना मुँह न दिखलावेंगी?

बिमला : आप क्रोध न करें, आपकी साली जरूर आपके सामने आवेगी और उसके साथ-साथ मैं भी इस बात को साबित कर दूँगी कि हम लोग आपके साथ दुश्मनी नहीं करते। इंदु हमारी बहुत ही प्यारी बहिन है और उसे हम लोग हद से ज्यादे प्यार करते हैं, जिस तरह

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** नहीं-नहीं, अगर तुम इंदु को प्यार करती होतीं तो उसे इस तरह मुझसे अलग करके संकट में न डालतीं। कुछ देर के लिए यह भी मान लिया जाय कि भूतनाथ हमारा दुश्मन है, गुलाबसिंह ने हमसे जो कुछ कहा वह झूठ था, और तुमने वास्तव में हमें एक दुश्मन के हाथ से बचाना चाहा, मगर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि वहाँ से बचा लाने के लिए वह ढंग अच्छा न था जो तुमने किया। अच्छा होता यदि तुम मुझे यहाँ ले आने के बदले में उस जगह केवल इतना ही कह देतीं कि 'देखो खबरदार हो जाओ, भूतनाथ का विश्वास मत करो, इंदु को लेकर निकल भागो और फलानी राह से मेरे पास चले आओ'। बस अगर तुम ऐसा करतीं तो मैं तुम्हारी इज्जत करता।

बिमला : ठीक है मगर मुझे विश्वास नहीं था कि आप यकायक मेरी बात मान जाएँगे।

"यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं।" इतना कहकर प्रभाकर सिंह एक उचित स्थान पर बैठ गए और बिमला भी उनके सामने बैठ गई।

प्रभाकर सिंह : **(कई सायत तक कुछ सोचने के बाद)** खैर पहिले यह बताओ कि जमना कहाँ है जिसके कारण मैं यहाँ तक आया?

बिमला : वे भी इसी जगह कहीं है, डर के मारे आपके सामने नहीं आतीं। उन्होंने मुझे यह कहकर आपके पास भेजा है कि 'जीजाजी से मेरा प्रणाम कहो और यह कहो कि मैं यहाँ बड़े संकट में पड़ी हुई ग्रहदशा के दिन काट रही हूँ। किसी कारणवश हर वक्त अपनी सूरत बदले रहती हूँ। दुश्मन पड़ोस में है जिसका हरदम डर ही लगा रहता है, अस्तु यदि आप मेरी रक्षा करने और मेरा भेद छिपाये रहने की प्रतिज्ञा करें तो मै। आपके सामने आऊँ नहीं तो

प्रभाकर सिंह : **(आश्चर्य से)** वाह वाह वाह!! **(कुछ देर तक सोच कर)** खैर जो कुछ हो, जमना को मैं इज्जत के साथ प्यार करता हूँ, वह मेरी बहुत ही नेक साली है। यद्यपि उसका यहाँ होना मेरे लिए एक ताज्जुब की बात है तथापि उसे देखकर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा। यदि यह उसी का मकान है तो मैं विशेष चिंता भी न करूँगा। तुम शीघ्र जाकर उसे कह दो कि मेरे सबब से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, तुम्हारे भेद तुम्हारी इच्छानुसार मैं जरूर छिपाऊँगा।

प्रभाकर सिंह की बात समाप्त होते ही प्रसन्नता के साथ बिमला ने अपने चेहरे पर से झिल्ली उतार कर अलग रख दी और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर सिंह : **(बिमला को पैरों पर से उठा कर)** जमना! अहा, क्या तुम वास्तव में जमना हो?

बिमला : जी हाँ, मैं वास्तव में जमना हूँ, इसमें आप कुछ ही देर सन्देह न करें। ज्यादे देर तक तरद्दुद में न डाल कर मैं अभी आपका भ्रम दूर कर देती हूँ! अपने जमना होने के सबूत में मैं आपको उस दिन की चिकोटी याद दिलाती हूँ जिस दिन मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा थी और जिसका हाल सिवाय आपके और किसी को मालूम नहीं है।

प्रभाकर सिंह : **(प्रसन्न होकर)** बेशक्, बेशक्, अब मुझे कुछ सन्देह नहीं रहा, परन्तु आश्चर्य! आश्चर्य!! तुम्हारे ससुर ने हाल ही से अपने हाथ में मुझे चिट्ठी लिखी थी कि जमना और सरस्वती दोनों मर गई हैं! मैंने यह हाल अभी तक तुम्हारी बहिन इंदु से नहीं कहा क्योंकि इस संकट के जमाने में इस खबर को सुनाकर उन्हें और भी दुःख देना मैंने

उचित नहीं जाना। मगर अब मुझे कहना पड़ा कि तुम्हारे ससुर ने मुझे झूठ लिखा, न मालूम क्यों?

बिमला : नहीं-नहीं, उन्होंने झूठ नहीं लिखा, उन्हें यही मालूम है कि जमना-सरस्वती दोनों मर गईं, मगर वास्तव में हम दोनों जीती हैं।

प्रभाकर सिंह : यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनातीं हो!

बिमला : आपके लिए बेशक् आश्चर्य की बात है। इसी से तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाये रहें, जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पाये।

इतना कहकर बिमला ने ताली बजाई। उसी समय तेजी के साथ सरस्वती **(कला)** एक दरवाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी। प्रभाकर सिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा, "आह! मैं इस समय तुम दोनों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरंग में तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था। अब यह मालूम होना चाहिए कि तुम लोग यहाँ क्यों, किसके भरोसे पर और किस नीयत से रहती हो, तथा बाहर मौलसिरी **(मालश्री)** के पेड़ पर मैंने किसे देखा? नहीं-नहीं, वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न थी, मैं पहिचान गया, इसी की सूरत इंदु से विशेष मिलती है!"

बिमला : बेशक् वह सरस्वती ही थी, क्षण-भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी।

कला : **(मुसकुराती हुई)** मगर जो कुछ मैं किया चाहती थी वह न कर सकी।

प्रभाकर सिंह : वह क्या?

कला : बस अब उसका कहना ठीक नहीं।

प्रभाकर सिंह : अच्छा यह बताओ कि तुम लोग यहाँ छिपकर क्यों रहती थीं?

बिमला : इसलिए कि कमबख्त भूतनाथ से बदला लेकर कलेजा कुछ ठंडा करें। आपको नहीं मालूम कि वह मेरे पति का घातक है। उसने अपने हाथ में उन्हें मारकर हम दोनों बहिनों को विधवा बना दिया!!

प्रभाकर सिंह : **(आश्चर्य से)** यह तुम क्या कह रही हो?

बिमला : बेशक् ऐसा ही है। आपने उस कमीने को पहिचाना नहीं! वह वास्तव में गदाधरसिंह है, सूरत बदले हुए चारों तरफ घूम रहा है। आजकल वह अपनी नौकरी पर अर्थात् मेरे ससुर के यहाँ नहीं रहता।

प्रभाकर सिंह : यह तो मुझे भी मालूम है, गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नहीं है, मगर यह बात मेरे दिल में नहीं बैठती कि भूतनाथ वास्तव में वही गदाधरसिंह है।

बिमला : मैं जो कहती हूँ बेशक् ऐसा ही है।

प्रभाकर सिंह : **(सिर हिलाकर)** शायद हो। **(कुछ सोचकर)** खैर पहिले मैं इंदु को उसके यहाँ से हटाऊँगा और तब साफ-साफ उससे पूछूँगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नहीं? मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयाराम को उसी ने मारा है।

बिमला : नहीं-नहीं, आप ऐसा कदापि न करें नहीं तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जाएगा।

प्रभाकर सिंह : नहीं, मैं जरूर पूछूँगा और यदि तुम्हारा कहना ठीक निकला तो मैं स्वयं उससे लड़ूँगा।

बिमला : **(उदासी से)** ओह! तब तो आप और भी अँधेर करेंगे!!

प्रभाकर सिंह : नहीं, इस विषय में मैं तुमसे राय न लूँगा।

बिमला : तब आप अपनी प्रतिज्ञा भंग करेंगे।

प्रभाकर सिंह : ऐसा ही न होने पावेगा **(कुछ सोच कर)** खैर यह तो पीछे देखा जाएगा पहिले इंदु की फिक्र करनी चाहिए। यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ है अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती।

बिमला : मैं उसके लिए बंदोबस्त कर चुकी हूँ, आप बेफिक्र रहें।

प्रभाकर सिंह : भला मैं बेफिक्र क्योंकर रह सकता हूँ ? मुझे यहाँ से जाने दो, भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि तुम चाहती हो तो उसे यहाँ तुम्हारे पास ले आऊँगा!

बिमला : जी नहीं, ऐसा करने से मेरा भेद खुल जाएगा। वह बड़ा ही कांइयाँ है, बात-ही-बात में आपसे पता लगा लेगा कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहाँ कोई रहता है। अभी उसे यह मालूम नहीं।

प्रभाकर सिंह : नहीं-नही, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूँगा।

बिमला : अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिए, पहिले जरूरी कामों से निपटिए, स्नान, ध्यान, पूजा-पाठ कीजिए, भोजन इत्यादि से छुट्टी पाइए, फिर जैसी राय होगी देखा जाएगा। मैं कुछ इंदु बहिन की दुश्मन तो हूँ नहीं जो उसे तकलीफ होने दूँगी बल्कि आपसे ज्यादे मुझे खुटका लगा हुआ है। अगर वह यहाँ न आई तो मैंने किया ही क्या!

प्रभाकर सिंह : खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, थोड़ी देर के लिए ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नहीं।

बिमला : अच्छा तो अब आप कुछ देर के लिए हम दोनों को छुट्टी दीजिए, मैं आपके लिए खाने-पीने का इंतजाम करूँ, तब तक आप इस **(उँगली का इशारा करके)** कोठरी में जाइए और फिर बंगले के बाहर जाकर मैदान और कुदरती बाग में जहाँ चाहिए घूमिए-फिरिए, मैं बहुत जल्दी हाजिर होऊँगी, मगर आप इस बात का खूब खयाल रखिएगा कि अब हम दोनों को जमना और सरस्वती के नाम से संबोधित न कीजिएगा और न हम दोनों घड़ी-घड़ी जमना और सरस्वती की सूरत में आपको दिखाई देंगी। हम दोनों का नाम बिमला और कला बस यही ठीक है।

इसके बाद और भी कुछ समझा-बुझाकर कला को साथ लिए हुए बिमला कमरे के बाहर चली गई।

प्रभाकर सिंह भी उठ खड़े हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे में टहलने लगे। वे सोचने लगे क्या जमना का कहना सच है? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यों नहीं? संभव है कि रात का समय होने के कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ सूरत बदली हुई हो! मेरा ध्यान भी तो इस तरफ नहीं था कि गौर से उसे देखता और पहिचानने की कोशिश करता, लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो निःसन्देह खोटा है और कोई भारी घात करने के लिए उसने यह ढंग पकड़ा है। ऐयार भी तो पहले दर्जे का है, वह जो न कर सके थोड़ा है, मगर ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो। अच्छा उसने रणधीरसिंह का घर क्यों छोड़ दिया जिनका ऐयार था और जो बड़ी खातिर से उसे रखते थे? संभव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास होकर अपना काम छोड़ दिया हो, या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन-सहन का रंग-ढंग बदल दिया हो। अगर ऐसा है तो रणधीरसिंह जी इस बात को जानते होंगे। गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर क्यों नहीं खोला? हो सकता है कि उन्हें यह सब मालूम न हो या वे धोखे में आ गए हों, परन्तु नहीं, गदाधरसिंह तो ऐसा आदमी नहीं था, अस्तु जो हो, बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किए किसी पक्ष को मजबूती के साथ पकड़ लेना उचित नहीं है। इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिए कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतंत्र क्यों

हा रही हैं और उन्होंने अपने को मुर्दा क्यों मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहाँ किसका सहारा पाकर ये दोनों रहती हैं। भूतनाथ से दुश्मनी रखना और वदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हंसी-खेल नहीं है और इस तरह रहने से रुपये-पैसे की भी कम जरूरत नहीं है। आखिर यह है क्या मामला! यह तो हमने पूछा ही नहीं कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आजकल किसकी होकर रहती हो। खैर अव पूछ लेंगे। कोई-न-कोई भारी आदमी इनका साथी जरूरी है, उसे भी भूतनाथ ने दुश्मनी है। क्या इन दोनों पर व्यभिचार का दोप भी लगाया जा सकता है? कैसे कहें 'हाँ' या 'नहीं' ऐसे खोटे दिल की तो ये दोनों थी नहीं, मगर ये सती और साधवी हैं तो इनका मददगार भी कोई इन्हीं का रिश्तेदार जरूर होगा, मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है। हाँ यह भी तो है कि यदि ये व्यभिचारिणी होती तो मुझे यहाँ न लातीं और इंदु को भी लाने की चेष्टा न करतीं...मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इंदु को यहाँ लाने की चेष्टा कर रही हैं! अच्छा जो होगा देखा जाएगा, चलो पहिले मैदान में घूम आवें तव फिर उन दोनों के आने पर वातचीत से सव मामले की थाह लेंगे।''

प्रभाकर सिंह दरवाजा खोल कर उस कोठरी में घुस गए जिसकी तरफ विमला ने इशारा किया था। उसके अंदर नहाने तथा संध्या-पूजा करने का पूरा-पूरा सामान करीने से रखा हुआ था, वल्कि एक छोटी-सी आलमारी में कुछ जरूरी कपड़े और भोजन करने के अच्छे-अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे। प्रभाकर सिंह ने अपनी ढाल-तलवार एक खूँटी से लटका दी और तीर-कमान भी एक चौकी पर रख कर कपड़े का कुछ वोझ हलका किया और जल से भरा हुआ लोटा उठा कर कोठरी के वाहर निकले। कई कदम आगे गए होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उस कोठरी में जाकर अपनी तलवार खूँटी पर से उतार लाये और वंगले के वाहर निकले।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी थी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाड़ी से सटा हुए एक छोटा-साथ चश्मा भी वह रहा था, जंगली गुलवूटे और सुन्दर पेड़ों की वहुतायत होने के कारण हवा वुरी नहीं मालूम होती थी। प्रभाकर सिंह पूरव तरफ मैदान की हद तक चले गए और नहर लाँघ कर पहाड़ी के कुछ ऊपर वढ़ गए जहाँ पेड़ों का एक वहुत अच्छा छोटा-सा झुरमुट था। जव कुछ देर वाद वहाँ से लौटे तो नहाने और संध्या-पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु वे उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर वैठ गए। घंटे-डेढ़-घंटे के अन्दर ही प्रभाकर सिंह सव जरूरी कामों से निश्चिन्त हो गए तथा अपने कपड़े भी धोकर सुखा लिए। इसके वाद उस वंगले में पहुँचे और इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहाँ आ गई होंगी मगर एक लौंडी के सिवाय वहाँ और किसी को भी न देखा जिसकी जुवानी मालूम हुआ कि 'उनके आने में अभी घंटे भर की देर है, तव तक आप कुछ जल-पान खा लीजिए जिसका सामान उस नहाने वाली कोठरी में मौजूद है।'

''अच्छा'' कहकर प्रभाकर सिंह ने उस लौंडी को तो विदा कर दिया और आप एक किनारे फर्श पर तकिए का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिंता करने लगे।

घंटे भर क्या कई घंटे बीत गये पर जमना और सरस्वती न आईं और प्रभाकर सिंह तरह-तरह की चिंता में डूवे रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कुछ जलपान भी न किया। जव थोड़ा-सा दिन वाकी रह गया तव वह घवड़ाकर वंगले के वाहर निकले और मैदान में घूमने लगे। अभी उन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नहीं हुई थी कि एक लौंडी वँगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकर सिंह के पास आई तथा एक चिट्ठी उनके हाथ में देकर जवाव का इंतजार किए विना ही वापस चली गई।

प्रभाकर सिंह ने चिट्ठी खोलकर पड़ी, यह लिखा हुआ था

''श्रीमान् जीजाजी,

मैं एक वड़े ही तरद्दुद में पड़ गई हूँ, मुझे मालूम हुआ कि इंदु वहिन वुरी आफत में पड़ा चाहती हैं, अस्तु मैं उन्हीं की फिक्र में जाती हूँ, लौट कर आपसे सव समाचार कहूँगी। आशा है कि तव तक आप सवके साथ यहाँ रहेंगे।

बिमला।"

इस चिट्ठी ने प्रभाकर सिंह को बड़े ही तरद्दुद में डाल दिया और तरह-तरह की चिंता करते हुए वह उस मैदान में टहलने लगे। उन्हें कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिए। उत्तर तरफ का मैदान समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुँचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडंडी देख ऊपर की तरफ चलने लगे।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा-सा काठ का दरवाजा नजर आया कि जिस पर साधारण जंजीर चढ़ी हुई थी।

वे इस दरवाजे को देखकर चौंके और चारों तरफ निगाह दौड़ाकर सोचने लगे, "हैं! यह दरवाजा कैसा? मैं तो बिना इरादा किए ही यकायक यहाँ आ पहुँचा। मालूम होता है कि यह कोई सुरंग है। मगर इसके मुँह पर किसी तरह की हिफाजत क्यों नहीं है? यह दरवाजा तो एक लात भी नहीं सह सकता। शायद इसके अन्दर किसी तरह की रुकावट हो जैसी कि उस सुरंग के अन्दर थी जिसकी राह से मैं यहाँ आया था? खैर इसके अन्दर चल के देखना तो चाहिए कि क्या है। कदाचित् इस कैदखाने के बाहर ही निकल जाऊँ, बेशक् यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए कैदखाना ही है। यदि इस राह से मैं बाहर निकल गया तो बड़ा ही अच्छा होगा, मैं इंदु को जरूर बचा लूँगा जिसे इस आफत के जमाने में भी मैंने अपने से अलग नहीं किया था। अच्छा जो हो, मैं इस सुरंग के अन्दर जरूर चलूँगा मगर इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नहीं पहिले बंगले के अन्दर चलकर अपनी पूरी पोशाक् पहिरना और अपने हरबे लगा लेना चाहिए, न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पड़े! न भी मौका पड़े तो क्या? कदाचित् इस घाटी के बाहर ही हो जाएँ तो अपने हर्बे क्यों छोड़ जायें?"

इस तरह सोच-विचार कर प्रभाकर सिंह वहाँ से लौटे और तेजी के साथ बँगले के अन्दर चले गये। बात-की-बात में अपनी पूरी पौशाक् पहिर और हर्बे लगाकर वे बाहर निकले और मैदान तय करके फिर उसी सुरंग के मुहाने पर जा पहुँचे।

दरवाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई न थी अतएव वे सहज ही में दरवाजा खोल उस सुरंग के अन्दर चले गये। सुरंग बहुत चौड़ी-ऊँची न थी, केवल एक आदमी खुले ढंग से उसमें चल सकता था, अगर सामने से कोई दूसरा आदमी आता हुआ मिल जाय तो बड़ी मुश्किल से दोनों एक-दूसरे को निकालकर अपनी-अपनी राह ले सकते थे। हाँ, लंबाई में यह सुरंग बहुत छोटी न थी बल्कि चार-साढ़े-चार सौ कदम लंबी थी। सुरंग में पूरा अंधकार था और साथ ही इसके वह भयानक भी मालूम होती थी, मगर प्रभाकर सिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाए आगे की तरफ बढ़े चले गए। जैसे-जैसे आगे जाते थे सुरंग तंग होती जाती थी।

जब प्रभाकर सिंह सुरंग खतम कर चुके तो आगे रास्ता बंद पाया, लकड़ी या लोहे का कोई दरवाजा नहीं लगा हुआ था जिसे बंद कहा जाय बल्कि अनगढ़ पत्थरों से ही वह रास्ता बंद था। प्रभाकर सिंह ने बहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर करने पर यही निश्चय किया कि बस अब आगे जाने का रास्ता नहीं है, मालूम होता है कि सुरंग बनाने वालों ने इसी जगह तक बनाकर छोड़ दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई।

इस विचार पर भी प्रभाकर सिंह का दिल न जमा, उन्होंने सोचा कि जरूर इसमें कोई बात है और यह सुरंग व्यर्थ नहीं बनाई गई होगी। उन्होंने फिर अच्छी तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया। मालूम होता था कि आगे छोटे-बड़े कई अनगढ़ पत्थरों का ढेर लगा हुआ है। इस बीच में दो-तीन पत्थर कुछ हिलते हुए भी मालूम पड़े जिन्हें प्रभाकर सिंह ने बलपूर्वक उखाड़ना चाहा। एक पत्थर तो सहज ही में उखड़ आया और जब उन्होंने उसे उठाकर अलग रखा तो छोटे-छोटे दो छेद मालूम पड़े जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थीं और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ दिन बाकी है। अब उन्हें और भी विश्वास हो गया कि अगर इसी तरह और दो-तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिए जाएँ तो जरूर रास्ता निकल आएगा अस्तु उन्होंने फिर जोर करना शुरू किया।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाए गए और अब छोटे-छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दरवाजा भी निकल आवेगा।

उन सूराखों से प्रभाकर सिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया। एक बहुत ही सुंदर घाटी नजर पड़ी और कई आदमी भी इधर-उधर चलते-फिरते नजर आये।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था, जहाँ जाते हुए यकायक प्रभाकर सिंह गायब हो गए थे, और जहाँ इस समय गुलाबसिंह और इंदुमति मौजूद हैं। प्रभाकर सिंह ने उसे घाटी को देखा नहीं था इसलिए बड़े गौर से उसकी सुंदरता को देखने लगे। उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इंदुमति विराज रही है तभी इस समय उनके देखते-ही-देखते वह एक भारी आफत में फँसना चाहती है।

प्रभाकर सिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित् पत्थरों के हिलाने-हटाने से कोई दरवाजा निकल आये और साथ ही इसके घड़ी-घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे। इस बीच में उनकी निगाह यकायक इंदुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊँचाई पर से धीरे-धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी। बस फिर क्या था! उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम से रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे, साथ ही इसके उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि यही भूतनाथ का वह स्थान है जहाँ हम इंदुमति के साथ आने वाले थे।

थोड़ी ही देर में इंदु भी नीचे उतर आई और धीरे-धीरे उस कुदरती बगीचे में टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकर सिंह थे और अंत में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकर सिंह से लगभग पचास-साठ कदम की दूरी पर होगी।

अब प्रभाकर सिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे, लाचार थे, तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया। अभी दो ही आवाज दी थी कि उनकी निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इंदु से थोड़ी दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अन्दर से निकले थे और इंदु की तरफ बढ़ रहे थे, उन्हें देखते ही इंदु भी घबराकर उनकी तरफ लपकी और पास पहुँचकर एक आदमी के पैरों पर गिर पड़ी जो शक्ल-सूरत में बिलकुल ही प्रभाकर सिंह से मिलता था या यों कहिए कि वह सचमुच एक दूसरा प्रभाकर सिंह था।[1]

प्रभाकर सिंह के कलेजे में एक बिजली-सी चमक गई, अपनी-सी सूरत बने हुए एक ऐयार का वहाँ पहुँचना और इंदु का उसके पैरों पर गिर पड़ना उनके लिए कैसा दुखदाई हुआ इसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। केवल इतना ही नहीं उनके देखते-ही-देखते नकली प्रभाकर सिंह ने अपने साथी को विदा कर दिया और इसके बाद वह इंदुमति को कुछ समझाकर अपने साथ ले भागा।

प्रभाकर सिंह चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर रह गए, कर ही क्या सकते थे? क्योंकि वहाँ तक इनका पहुँचना बिलकुल ही असंभव था।

उन्होंने पत्थरों को हटाकर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब नतीजा न निकला तो पेचोताब खाते हुए वहाँ से लौट पड़े। अब सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं और अँधकार चारों तरफ से घिरा आ रहा है अस्तु तरह-तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकर सिंह बंगले की तरफ लौटे और जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि हर एक स्थान में मौके-मौके से रोशनी आ रही है।

प्रभाकर सिंह उसी कमरे में पहुँचे जिसमें बिमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिए के सहारे बैठकर चिंता करने लगे। वे सोचने लगे

"वह कौन आदमी होगा जिसने आज इंदु को इस तरह धोखे में डाला? इंदु की बुद्धि पर भी कैसा परदा पड़ गया कि उसने उसे बिलकुल नहीं पहिचाना! पर वह पहिचानती ही क्योंकर? एक तो वह स्वयं घबड़ाई हुई थी दूसरे संध्या होने के

कारण कुछ अंधकार-सा भी हो रहा था, तीसरे वह ठीक-ठीक मेरी सूरत बनकर वहाँ पहुँचा भी था, मुझमें और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था, कमवख्त पोशाक भी इसी ढंग की पहिने हुए था, न मालूम इसका पता उसे कैसे लगा! नहीं, यह कोई आश्चर्य की वात नहीं है क्योंकि इस समय भी मेरी पोशाक् वैसी ही है जैसी हमेशा रहती थी, इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिए कोई नया नहीं हो सकता। अस्तु जो हो मगर इस समय इंदु मेरे हाथ से निकल गई। न मालूम अव उस वेचारी पर क्या आफत आवेगी! हाय, यह सव खराबी बिमला की बदौलत हुई, न वह मुझको बहका के यहाँ लाती और न यह नौवत पहुँचती। हाँ, यह भी संभव है कि यह कार्रवाई बिमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घंटे बीते हैं कि उसने मुझे लिखा भी था कि इंदु किसी आफत में फँसना चाहती है, उसकी मदद को जाती हूँ। शायद उसका मतलव इसी आफत से हो! क्या यह भी हो सकता है कि विमला ही ने यह ढंग रचा हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत वनाकर इंदु को निकाल लाने के लिए भेजा हो! नहीं, अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि 'इंदु बहिन वुरी आफत में पड़ना चाहती है।' हाँ, यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले से उसे पता लगा हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इंदु को छुड़ाने के लिए वह गई हो। जो हो, कौन कह सकता है कि इंदु किन मुसीवत में गिरफ्तार हो गई! अफसोस इस बात का है कि मेरी आँखों के सामने यह सव कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका।"

इसी तरह की बातें प्रभाकर सिंह को सोचते कई घंटे बीत गए मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहाँ न पहुँचा। कई नौजवान लड़के जो बँगले के वाहर पहरे पर दिखाई दिए थे इस समय उनका भी पता न था। दिनभर उन्होंने कुछ भोजन नहीं किया था मगर भोजन करने की उन्हें कोई चिंता भी न थी, वे केवल इंदुमति की अवस्था और अपनी वेवसी पर विचार कर रहे थे, हाँ, कभी-कभी इस वात पर भी उनका ध्यान जाता कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने-पीने के लिए ही किसी ने पूछा!

चिंता करते-करते उनकी आँखें लग गई और नींद में भी वे इंदुमति के विषय में तरह-तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे। आधी रात जा चुकी जव एक लौंडी ने आकर उन्हें जगाया!

प्रभाकर सिंह : **(लौंडी से)** क्या है?

लौंडी : मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई हूँ।

प्रभाकर सिंह : कहाँ है?

लौंडी : **(उँगली से इशारा करके)** उस कमरे में।

प्रभाकर सिंह : मैं भोजन न करूँगा, जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ।

लौंडी : मैं ही नहीं कला जी भी आई हैं जो कि उस कमरे में बैठी आपका इंतजार कर रही हैं।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकर सिंह उठ बैठे और उस कमरे में गए जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकर सिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने-धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी कुछ रखा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पड़ी जो एक कंबल पर बैठी हुई थी। प्रभाकर सिंह को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उसने बड़े आग्रह से उन्हें यह कंबल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामग्री रखी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकर सिंह ने कहा

प्रभाकर सिंह : कला, आज तुम लोगों की बदौलत मुझे बड़ा ही दुःख हुआ।

कला : **(बैठकर)** सो क्या?

प्रभाकर सिंह : **(चिढ़े हुए ढंग से)** मेरी आँखों के सामने से इंदु हर ली गई और मैं कुछ न कर सका!!

कला : ठीक है, आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा।

प्रभाकर सिंह : सो तुमने कैसे जाना?

कला : यहाँ दो सुरंगें ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखाई देती है। उनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोकों से मामूली ढंग से बंद किए हुए हैं और दूसरी के सूराख खुले हुए हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर का रंग-ढंग देखा करती हैं।

प्रभाकर सिंह : ठीक है, इत्तिफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुँच गया था जिसमें देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बंद किए हुए थे।

कला : जी हाँ, मगर हम लोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी।

प्रभाकर सिंह : तब तुम लोगों ने क्या किया?

कला : यही किया कि इंदु बहिन को उस आफत से छुड़ा लिया।

प्रभाकर सिंह : **(प्रसन्नता से)** तो इंदु कहाँ है?

कला : एक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थान में। अब आप भोजन करते जाइए और बातें किए जाइए, नहीं तो मैं कुछ न कहूँगी, क्योंकि आप-दिन-भर के भूखे हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि दो दिन ही के भूखे हों। यहाँ जो कुछ खाने-पीने का सामान पड़ा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था।

मजबूर होकर प्रभाकर सिंह ने भोजन करना आरंभ किया और साथ-ही-साथ बातचीत भी करने लगे।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो मैं इंदु को देखना चाहता हूँ।

कला : जी नहीं, अभी देखने का उद्योग न कीजिए, कल जैसा होगा देखा जाएगा क्योंकि इस समय उसकी तबीयत खराब है, दुश्मनों के हाथ से चोट खा चुकी है, यद्यपि उसने बड़े साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया।

इस खबर ने भी प्रभाकर सिंह की तरद्दुद में डाल दिया। वे इंदु को देखना चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसा करना अनुचित होगा और वैद्य की भी यही राय है।

बड़ी मुश्किल से कला ने प्रभाकर सिंह को भोजन कराया और कल पुनः मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई। प्रभाकर सिंह को इस बात का पता न लगा कि यह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकर सिंह इंदु की तरफ से बेफिक्र हो गए? नहीं कदापि नहीं! उन्हें कुछ ढाँढस हो जाने पर भी कला की बातों पर पूरा विश्वास न हुआ। उनका दिल इस बात को कबूल नहीं करता था कि यदि कला और बिमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इंदु को दिखला देती तो कोई हर्ज होता। बात तो यह है कि कला तथा बिमला का इस तरह गुप्त रीति से आना-जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगों पर विश्वास नहीं जमने देता था, हाँ, इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचार-प्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिंता के साथ-ही-साथ किसी और चिंता में भी निमग्न होने लगे।

कई घंटे तक कुछ सोचने-विचारने के वाद वे उठ खड़े हुए और दालानों, कमरों तथा कोठरियों में घूमने-फिरने और टोह लगाने के साथ-ही-साथ दीवारों, आलों और आलमारियों पर भी निगाहें डालने लगे। पिछली रात का समय, इनके सिवाय कोई दूसरा आदमी वँगले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था, मगर जहाँ तक देखने में आता था कमरों और कोठरियों में रोशनी जरूर हो रही थी।

कमरों और कोठरियों में छोटी-वड़ी आलमारियाँ देखने में आईं जिनमें से कई में तो ताला लगा हुआ था कई विना ताले की थीं और कई में किवाड़ के पल्ले भी न थे।

इन्हीं कोठरियों में से एक कोठरी ऐसी भी थी जिसमें अँधकार था अर्थात् चिराग नहीं जलता था अतएव प्रभाकर सिंह ने चाहा कि इस कोठरी को भी अच्छी तरह देख लें। उसके पास वाली कोठरी में एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जव उस कोठरी के दरवाजे के पास पहुँचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई। वे ठमक गये और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे। आदमी के पैरों की चाप-सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अंदर जरूर है, मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकर सिंह शमादान लिए हुए कोठरी के अन्दर चले गए।

और कोठरियों की तरह यह भी साफ-सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श विछा हुआ था। हाँ, छोटी-छोटी आलमारियाँ इसमें वहुत ज्यादे थीं जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला ताली समेत उसकी कुंडी के साथ अड़ा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियों का एक गुच्छा ही था।

ये शमादान लिए हुए उस आमलारी के पास चले गये और उसका पल्ला अच्छी तरह खोल दिया। उसमें तीन दर वने हुए थे जिनमें से एक में हाथ की लिखी हुई किताबें थीं, दूसरे में कागज-पत्र के छोटे-वड़े कई मुट्ठे थे, और तीसरे में लोहे की कई वड़ी-वड़ी तालियाँ थीं और सबके साथ एक-एक पुर्जा वँधा हुआ था, उन्होंने एक ताली उठायी और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढ़ा और फिर ज्यों-का-त्यों उसी तरह ठीक करके रख दिया, इसके वाद दूसरी ताली का पुर्जा पढ़ा और उसी तरह रख देने के वाद फिर क्रमशः सभी तालियों के साथ वाले पुर्जे पढ़ डाले और अंत में एक ताली पुर्जे सहित उठाकर अपनी जेव में रख ली।

तालियों की जाँच करने के वाद उन कागज के मुट्ठों पर हाथ डाला और घंटे-भर तक अच्छी तरह देखने-जाँचने के वाद उसमें से भी तीन मुट्ठे लेकर अपने पास रख लिए और फिर किताबों की जाँच शुरू की। इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इनमें से कोई किताव उन्होंने ली नहीं।

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होंने किसी और आलमारी को जाँचने या खोलने का इरादा नहीं किया। वे वहाँ से लौटे और शमादान जहाँ से उठाया था वहाँ रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहाँ आराम कर चुके थे। वहाँ भीद वे ज्यादे देर तक नहीं ठहरे सिर्फ अपने कपड़ों और हर्वों की दुरुस्ती करके बंगले के बाहर निकले। आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम वाकी है और आसमान पर पूरव तरफ सफेदी फैलना ही चाहती है।

"कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिव है," यह सोचकर वे इधर-उधर घूमने और टहलने लगे। जव रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तव दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए। जव मैदान खतम कर चुके और पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो उन्हें एक हलकी-सी पगडंडी दिखाई पड़ी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडंडी मालूम होती थी, हाँ, इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाड़ी के ऊपर कुछ दूर तक चढ़ने में सुभीता हो सकता था अस्तु प्रभाकर सिंह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। लगभग पचास कदम चढ़ जाने के बाद उन्हें एक छोटी-सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे बेधड़क् चले गए और फिर कई दिनों तक वहाँ से लौट कर बाहर न आए।

8

आज प्रभाकर सिंह उस छोटी-सी गुफा के वाहर आए हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि वे इतने दिनों तक निराहार या भूखे रह गए होंगे क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती। जिस समय वे गुफा के वाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उन्होंने वँगले के अन्दर जाना कदाचित् उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारों तरफ टहलने लगे। नहीं-नहीं, हम यह भी नहीं कह सकते कि वे वास्तव में प्रसन्न थे क्योंकि वीच-वीच में उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लंवी साँस लेकर रह जाते थे। संभव है कि यह उदासी इंदुमति की जुदाई से संवंध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होंने उस गुफा के अन्दर पाया हो। तो क्या उन्हें उस गुफा के अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के वाहर हो गए थे अथवा उन्हें किसी तिलिस्म का दरवाजा मिल गया जिसमें उन्होंने कई दिन विता दिए? जो हो, वात कोई अनूठी जरूर है और घटना कुछ आश्चर्यजनक अवश्य है।

वहुत देर तक इधर-उधर घूमने के वाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान पर वैठ गए और साथ ही किसी गंभीर चिंता में निमग्न हो गए। इसी समय इन्हें इंदुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस वात की प्रभाकर सिंह को कुछ खवर न थी।

वहुत देर तक चट्टान पर वैठे कुछ सोचने-विचारने के वाद उन्होंने सर उठाया और इस नियत से वँगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चलकर किसी और विष की टोह लगावें, परन्तु उसी समय वँगले के अन्दर से आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इंदुमति, दूसरी विमला और तीसरी कला थी।

इंदुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए, इधर इंदुमति भी इन्हें देखते ही दीवानी-सी होकर दौड़ी और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर सिंह : **(इंदु को उठा कर)** अहा इन्दे! इस समय तुझे देख मैं कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुवान है अस्तु मैं कुछ कह नहीं सकता।

इंदुमति : नाथ, मुझे आपने धोखे में डाला! **(मुसकराती हुई)** मुझे तो इस वात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलवुली औरत को देखकर अपने आपे से वाहर हो जाएँगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर ऐसा ही वर्त्ताव करना आपको उचित था? क्या आप की उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था!

प्रभाकर सिंह : **(हँसते हुए)** वाह, तुम अपनी वहिन को और अपने ही मुँह से चुलवुली वनाओ! क्या मैं किसी चुड़ैल के पीछे दौड़ा था? तुम्हारी वहिन इस विमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि जरूरी वात कहनी है। मैंने समझा कि यह अपनी है जरूर कुछ भलाई की वातें कहेंगी, अस्तु इनके फेर में पड़ गया ओर तुम्हें खो वैठा। तुम्हारे साथ गुलावसिंह मौजूद ही थे और इधर विमला से मैं कुछ सुनना चाहता था। ऐसी अवस्था में यह कव आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना पहाड़ टूट पड़ेगा! सच तो यह है कि तुम्हारी वहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे वहुत रंज है और मैं उसके लिए इनसे वहुत बुरा वदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसीलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूँ मगर इस वात की शिकायत

जरूर करूँगा कि मुझे यहाँ फँसा इन्होंने भूखों मार डाला, खाने तक को न पूछा। आओ-आओ वैठ जाओ, सव कोई वैठ कर वातें करें।

विमला : वाह! वहुत अच्छी कही, आपने तो मानो अनशन व्रत ग्रहण किया था! साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि किसी

की फिक्र और तरद्दुद के कारण खाना-पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था।

कला : **(मुसकराती हुई)** रात-रात भर जाग के कोने-कोने की तलाशी लिया करते थे कहीं छेद-सुराख और आले-अलमारी में से इंदुमति निकल आवे।

प्रभाकर सिंह : **(चौंककर, कला से)** सो क्या?

बिमला : बस इतना ही तो! खैर इन बातों को जाने दीजिए यह बताइए कि आप मुझसे संतुष्ट हुए कि नहीं? अथवा आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था?

प्रभाकर सिंह : चाहे यह बात ठीक हो, चाहे तुम पर हर तरह से निर्दोष हो, चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह का ऐब का धब्बा लगाना कठिन अथवा असंभव ही क्यों न हो, परन्तु इतना तो मैं जरूर कहूँगा कि तुम्हारी यह कर्रवाई बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई। संभव था कि जिस दुश्मन पर फतह पाके तुम इंदुमति को छुड़ा लाईं वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इंदुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती! मेरी समझ में नहीं आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात से तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुँचा, हाँ, इंदुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहाँ यही समझा दिया होगा कि इंदुमति को साथ लेकर वहाँ से हट जाना मुनासिब है तो..

बिमला : **(बात काट कर)** नहीं-नहीं, यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर कदापि विश्वास न करते और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का साथ न छोड़ते, साथ ही इसके यह भी असंभव था कि वहाँ पर मैं सविस्तार अपना हाल कहकर आपको समझाती, भूतनाथ के ऐबों को दिखाती अथवा उचित-अनुचित बहस करती, बल्कि..

इंदुमति : **(बात काट कर, प्रभाकर सिंह से)** खैर इन सब बातों से क्या फायदा, जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिए सोचना चाहिए कि हम लोगों का कर्त्तव्य क्या है और क्या करना उचित होगा। मै। इतना जरूर कहूँगी कि हमारी ये दोनों जमाने के हाथों से सताई हुई बहिनें इस योग्य नहीं हैं कि इन पर बदनीयती का धब्बा लगाया जाय। हाँ यदि कुछ भूल समझी जाय तो वह बड़े-बड़े बुद्धिमान लोगों से भी हो जाया करती है। साथ ही इसके यह भी मानना पड़ेगा कि ग्रहदशा के फेर में पड़े हुए कई आदमी एक साथ मिलकर मुसीबत के दिन काटना चाहें तो सहज में काट सकते हैं बनिस्बत इसके कि वे सब अलग-अलग होकर कोई कार्रवाई करें, आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनों **(कला और बिमला)** किस तरह जमाने अथवा भूतनाथ के हाथों से सताई जा चुकी हैं अस्तु हम लोगों का एक साथ रहना लाभदायक होगा।

प्रभाकर सिंह : **(इंदु से)** तुम्हारा कहना कुछ-कुछ जरूर ठीक है, मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि तुम यहाँ रहो जब तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पाकर स्वतंत्र और निश्चिन्त न हो जाऊँ। मुझे इस बात की जरूर खुशी है कि तुम्हारे लिए एक अच्छा ठिकाना निकल आया है। मगर मैं हाथ-पैर तुड़ाकर नहीं रह सकता।

इंदुमति : मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिए।

प्रभाकर सिंह : इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हूँ, मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूँगा जब तक कि अच्छी तरह जाँच न लूँ और अपने दोस्त गुलाबसिंह से राय न मिला लूँ।

बिमला : **(कुछ घबराहट के साथ)** तो क्या आप हम लोगों के बारे में गुलाबसिंह से कुछ जिक्र करेंगे?

प्रभाकर सिंह : बेशक्!

बिमला : तब तो आप चौपट ही करेंगे क्योंकि गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारा हाल जरूर कह देना,

ऐसी अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिलकुल ही पाला पड़ जाएगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि सहज ही में इस दुनिया से...**(लंबी साँस लेकर)** ओफ! यदि मैं आपसे भलाई की आशा न करूँ तो दुनिया में किससे कर सकती हूँ? वह कौन-सा दरख्त है जिसके साये तले मैं बैठ सकता हूँ और वह कौन-सा मकान है जिसमें स्वतंत्र परू से रह कर जिंदगी बिता सकती हूँ? एक इन्द्रदेव जिन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा है, और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती हूँ। यदि आप ही मेरी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हो जाएँगे तो हमारी रक्षा करने वाला और हमारे सतीत्व को बचाने वाला, हमारे धर्म का प्रतिपालन करने वाला और कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथलता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा? मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलाबसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलाबसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो, साथ ही इसके मैं डंके की चोट पर कह सकती हूँ कि यदि आप मुझे धर्म-पथ से विचलित हुई पावें, यदि आपको मेरे निर्मल आँचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे, और यदि जाँच करने पर मैं झूठी साबित होऊँ तो आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक करें जो कि अनपढ़, उजड्ड और अधर्मी दुश्मन के किए भी न हो सके। बेशक् आप मुझे..

इतना कहते-कहते बिमला का गला भर आया और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली।

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर दिलासे के ढंग से)** बस-बस बिमला बस, मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुबार निकालने के लिए तेरी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि तेरे भेदों को तुझसे ज्यादा छिपाऊँगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रकट न करूँगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यार क्यों न हो, साथ ही इसके विश्वास दिलाता हूँ कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो। मगर हाँ, मैं भूतनाथ की जाँच जरूर करूँगा कि वह कितने पानी में है।

बिमला : **(खुशी से प्रभाकर सिंह को प्रणाम करके)** बस मैं इतना ही सुनना चाहती थी, आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है। आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके मेरी भी जाँच कीजिए मैं इसके लिए कदापि न रोकूँगी, मगर मैं खुद जानती हूँ कि भूतनाथ परले सिरे का बेईमान, दग़ाबाज और खुदगर्ज ऐयार है और ऐयारी के नाम में धब्बा लगाने वाला है। मै। आपको एक चीज दूँगी जो समय पड़ने पर आपको बचावेगी, वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुर के पास रहने योग्य है। यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊँगी।

प्रभाकर सिंह : मैं बड़ी खुशी से इन्द्रदेव से मिलने के लिए तैयार हूँ, उनसे मिलकर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता। वे निःसन्देह महात्मा हैं और मुझे उनसे मिलने की सख्त जरूरत है! मैं यह भी जानता हूँ कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी भी पूरी सहायता कर सकते हैं।

बिमला : निःसन्देह ऐसा ही है। आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें, इन तीन दिनों में कई अद्भुत चीजें आपको दिखाऊँगी और इन्द्रदेव जी से भी मुलाकात कराऊँगी क्योंकि कल वे यहाँ जरूर आवेंगे।

कला : **(मुसकराती हुई दिल्लगी के साथ)** मगर ऐसा न कीजिएगा कि उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी में ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें।

प्रभाकर सिंह : मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस रात की कार्रवाई देख ली है, इसे दोहराने की कोई जरूरत न थी! अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक् इसी तरह जबर्दस्ती देखने का उद्योग करूँगा।

कला : जबर्दस्ती से कि चोरी से!

इतना कहकर कला खिलखिलाकर हँस पड़ी और तब तक कुछ देर तक इन सभों में इधर-उधर की बातें होती रहीं, इसके बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बँगले के अन्दर चले गए और वहाँ भी कई घंटे तक

हँसी-दिल्लगी तथा ताने और उलाहने की बातें होती रही। इस बीच में इंदु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकर सिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा-सुना था इससे बयान किया।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ़ चुका था जब विमला सभों को लिए हुए अपने महल में आई। इतनी देर तक खुशी में किसी को भी नहाने-धोने अथवा खाने की सुध न रही।

9

तीन दिन नहीं बल्कि पाँच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूट कर आज प्रभाकर सिंह उस अद्भुत खोह के बाहर निकले हैं। इन पाँच दिनों के अन्दर उन्होंने क्या-क्या देखा-सुना, किस-किस स्थान की सैर की, किस-किस से मिले-जुले, सो हम यहाँ पर कुछ भी न कहेंगे सिवाय इसके कि वे इंदुमति को बिमला और कला के पास छोड़ गए हैं और इस काम से बहुत प्रसन्न भी हैं। साथ ही इसके यह भी कह देना उचित जान पड़ता है कि अब उनके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है। प्रभाकर सिंह सिर झुकाए कुछ सोचते हुए पहाड़ के किनारे भूतनाथ की घाटी की तरफ धीरे-धीरे चले जा रहे हैं। वे जानते हैं कि भूतनाथ की घाटी का दरवाजा अब दूर नहीं है तथा उन्हें यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिंह ताज्जुब नहीं कि बाहर ही मिल जाएँ। इसलिए वे धीरे-धीरे दम उठाते हैं, इधर-इधर चौकन्ने होकर देखते हैं और कभी-कभी पत्थर की किसी सुन्दर चट्टान पर बैठ जाते हैं।

प्रभाकर सिंह का सोचना बहुत ठीक निकला। वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया, मगर इन्हें सुस्त और उदास देखकर उसे ताज्जुब और दुःख हुआ क्योंकि जिस तपाक् के साथ वह प्रभाकर सिंह से मिलना चाहता था उस तपाक् के साथ प्रभाकर सिंह उससे नहीं मिले, न तो उसका इस्तकबाल किया और न उसे आवभगत के साथ लिया। हाँ, इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख उठ खड़े हुए और एक लंबी साँस लेकर बोले, "बस भूतनाथ! तुमसे मुलाकात हो गई अब केवल गुलाबसिंह से मिलने की अभिलाषा है! इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकर सिंह की सूरत में नहीं देख सकेगा!!"

भूतनाथ : **(आश्चर्य से)** क्यों-क्यों, सो क्यों?

प्रभाकर सिंह : तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा कोई भी नहीं है, एक इंदुमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुँच गई, जहाँ कोई भी जाकर उससे मिल भी नहीं सकता।

भूतनाथ : नहीं-नहीं प्रभाकर सिंह, ये शब्द बहादुरों के मुँह से निकलने योग्य नहीं हैं! क्या इंदुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ?

प्रभाकर सिंह : कुछ क्या बल्कि बहुत।

भूतनाथ : किस रीति से?

प्रभाकर सिंह : आश्चर्यजनक रीति से।

भूतनाथ : किसकी जुबानी?

प्रभाकर सिंह : एक निर्जीव मूरत की जबानी।

भूतनाथ :बस इस पहेल से तो काम नहीं चलता, खुलासा कहिए नहीं तो..

प्रभाकर सिंह : अच्छा बैठो और सुनो।

दोनों बैठ गए और तब भूतनाथ ने प्रभाकर से पूछा

भूतनाथ : अच्छा अब कहिए कि क्या हुआ और किसी जुबानी आपको इंदुमति का हाल मालूम हुआ?

प्रभाकर सिंह : मैं कह चुका हूँ कि एक निर्जीव मूरत की जुबानी मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुनकर तुम ताज्जुब करोगे। सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस में कैसा एक विचित्र स्थान है! **(रुककर)** नहीं नहीं, यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हूँ, निःसन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सबसे ज्यादे तुम्हीं को मालूम होगा, मैं तो नया मुसाफिर हूँ।

भूतनाथ : आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं? कुछ समझाइए भी तो।

प्रभाकर सिंह : **(हाथ का इशारा करके)** बस इसी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक शिवालय है जिसके अन्दर शिवजी की नहीं बल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है जो कि पूरे आदमी के कद की...

भूतनाथ : हाँ-हाँ ठीक है इस तरफ के जँगली लोग उसे अगस्तमुनि की मूर्ति कहते हैं, खूब लंबी-लंबी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा-सा कुंड है जिसमें हरदम जल भरा रहता है न मालूम वह जल कहाँ से आता है चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नहीं। वह स्थान 'अगस्ताश्रम' के नाम से पुकारा जाता है।

प्रभाकर सिंह : बस-बस, वही स्थान है।

भूतनाथ : फिर, उससे क्या मतलब?

प्रभाकर सिंह : उसी मूर्ति की जुबानी मुझे कई बातें मालूम होती हैं, तुम्हें तो मालूम ही होगा कि उसमें बात करने की शक्ति है।

भूतनाथ : **(दिल्लगी के तौर पर हँसकर)** बहुत खासे! यह आपसे किसने कह दिया कि भूतनाथ ऐसा पागल हो गया है कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा!

प्रभाकर सिंह : तो क्या मैं गप्प उड़ा रहा हूँ?

भूतनाथ : अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही सही!

प्रभाकर सिंह : नहीं कदापि नहीं, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहाँ के रहने वाले होकर उस मूर्ति का हाल कुछ नहीं जानते और यदि मैं कुछ कहता भी हूँ तो दिल्लगी उड़ाते हो! अस्तु जाने दो अब मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कहूँगा हाँ, तुम चाहो तो साबित कर दूँगा कि वह मूर्ति बोलती है और त्रिकालदर्शी है। अच्छा जाओ गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर विदा होऊँ।

भूतनाथ : तो आप मेरे स्थान पर ही क्यों नहीं चलते? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा, गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जाएगा।

प्रभाकर सिंह : नहीं, अब मैं वहाँ न जाऊँगा। मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हूँ तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूँगा, बस अब इस विषय में जिद न करो।

भूतनाथ : प्रभाकर सिंह जी, मैं खूब जानता हूँ कि आप क्षत्रिय हैं और सच्चे बहादुर हैं, आपकी वीरता मौरूसी है, खानदानी है, निःसन्देह आपके बड़े लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं, मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढंग की बातें करके धोखे में डालना चाहते हैं...अच्छा-अच्छा,मेरी बातों से यदि आपकी भृकुटी चढ़ती है तो जाने दीजिए, मैं कुछ न कहूँगा, जाता हूँ और गुलाबसिंह को बुलाए लाता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुनकर उसके तीन शागिर्द बात-की-बात में वहाँ आ पहुँचे। भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर विदा हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया। प्रभाकर सिंह को मालूम हो

गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड़ गया है।

कुछ सोच-विचारकर प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और धीरे-धीरे ईशरान कोण की तरफ जाने लगे। एक घड़ी बरावर चले जाने के वाद वह उस शिवालय के पास पहुँचे जिसका जिक्र अभी थोड़ी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम वतलाया था।

यह स्थान वहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड़ की तराई में कुछ ऊँचे की तरफ वढ़कर वना हुआ था। इस जगह दूर-दूर तक वेल के पेड़ वहुतायत के साथ लगे हुए थे और वेलपत्र की छाया से यह जगह वहुत ठंडी जान पड़ती थी। मंदिर यद्यपि वहुत वड़ा न था मगर एक खूवसूरत छोटी-सी चारदीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामंडप और वीच में मूर्ति के आगे एक छोटा-सा कुंड वना हुआ था जिसमें पानी हरदम भरा रहता था। वह कुंड यद्यपि वहुत छोटा अर्थात् डेढ़ हाथ चौड़ा तथा लंवा और उसी अंदाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकड़ों आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाड़ी सोते का मुँह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल वरावर आता और वह कर ऊपर की तरफ से निकलता जाता था। इस कुंड के विषय में लोग तरह-तरह की गप्पें उड़ाया करते थे जिसके लिखने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं।

प्रभाकर सिंह आकर इस मंदिर के सभामंडप में वैठ गए और भूतनाथ तथा गुलावसिंह का इंतजार करने लगे। उन्होंने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा है वल्कि इधर-उधर चलते-फिरते दिखाई दे रहे हैं।

संध्या हुआ ही चाहती थी जव गुलावसिंह को लिए भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा जहाँ प्रभाकर सिंह वैठे उन दोनों का इंतजार कर रहे थे। प्रभाकर सिंह को देखकर गुलावसिंह ने प्रसन्नता प्रकट की और दो-चार मामूली वातचीत के वाद कहा

"भूतनाथ की जुवानी आपका हाल सुन कर मुझे वड़ा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने की कोशिश की थी कि यह अगस्तमुनि की मूर्ति वोलती है और इसकी जुवानी आपको इंदुमति का वहुत कुछ हाल मालूम हुआ है।"

प्रभाकर सिंह : निःसन्देह! मेरा कहना केवल आश्चर्य वढ़ाने के लिए नहीं है वल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है, अव तुम आ गए हो तो अपने कानों से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है, मुझे यह वात अकस्मात् मालूम हुई। मैं नहीं जानता था कि इस मूर्ति में ऐसे गुण भरे हुए हैं, मगर अफसोस इस वात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं वोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाव का देती है। इसके वोलने का खास-खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीक हाल मुझे मालूम नहीं है मगर इतना मैं जान गया हूँ कि वातचीत करते समय यह मूर्ति अंत में खुद वता देती है कि अव आगे किस दिन और किस समय वोलेगी। इसकी जुवानी सुनकर मैं कहता हूँ कि आज ग्यारह घड़ी रात जाने के वाद यह मूर्ति पुनः वोलेगी और इसके वाद पुनः रविवार के दिन वातचीत करेगी। आह, ईश्वर की लीला का किसी को भी अंत नहीं मिलता! मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या मामला है?

गुलावसिंहः निःसन्देह यह आश्चर्य की वात है! खैर अव जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो वताइए कि आप इस मूर्ति की जुवानी क्या-क्या सुन चुके हैं?

प्रभाकर सिंह : सो मैं अभी कुछ नहीं कहूँगा, थोड़ी ही देर की तो वात है सब्र करो, समय आना ही चाहता है, जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना। तव तक मैं जरूरी कामों से निपटकर संध्योपासना में लगता हूँ, अगर उचित समझें तो आप लोग भी निपट लीजिए।

भूतनाथ : मैं आपके लिए खाने-पीने की सामग्री लेता आया हूँ।

10

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है। भूतनाथ, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह उत्कंठा के साथ उस **(अगस्तमुनि की)** मूर्ति की तरफ देख रहे हैं। एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मंदिर के अन्दर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं। भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है।

यकायक कुछ गाने की आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ मानो मूर्ति गा रही है, सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :

।। बिरह ।।

सबहि दिन नाहिं बराबर जात।
कबहूँ कला बला पुनि कबहूँ कबहूँ करि पछितात।
कबहूँ राजा रंक पुनि कबहुँ ससि उड्गन दिखलात।।
पै करनी अपनी सब चाखैं, फल बोये को खात।
अनरथ करम छिपे नहिं कबहूँ, अन्त सबै खुल जात।।
सबहि दिन नाहिं बराबर जात।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी

"आहा! आज मैं अपने सामने किस-किस को बैठा देख रहा हूँ? महात्मा प्रभाकर सिंह! धर्मात्मा गुलाबसिंह! मैं अभी धर्मात्मा कैसे कहूँ, क्या संभव है कि भविष्य में भी यह धर्मात्मा बना रहेगा?

"खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा। हाँ, यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन था! वही गदाधरसिंह जिसने एकदम से अपनी काया पलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ के भूतनाथ नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया! आह, दुनिया में किसी पर विश्वास और भरोसा न करना चाहिए और न किसी की मित्रता पर किसी को घमंड करना चाहिए। क्या दयाराम के स्वप्न में भी इस बात का गुमान रहा होगा कि मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ से मारा जाऊँगा, दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह!"

मूर्ति की यह बात सुनकर भूतनाथ का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकर सिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगे। मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया

"अफसोस! अपनी चूक का प्रायश्चित करना उचित न था कि ढंग बदल कर पुनः पाप में लिप्त होना। भूतनाथ, क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रहकर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगा से मिलकर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटोगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे? नहीं-नहीं, कदापि नहीं! गदाधरसिंह, तुम्हारी किस्मत में दुःख भोगना बदा है अस्तु भोगो, जो जी में आवे करो मगर ऐ गुलाबसिंह, तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यों दिया चाहते हो जो बिना कदम लगाए आसमान पर चढ़ जाने का हौंसला करता है, खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा, और ऐ प्रभाकर सिंह, तुम अब अपनी आँखों के आँसू पोंछ डालो, इंदुमति को बिलकुल भूल जाओ, अपने कातर हृदय को ढाँढस देकर वीरता का स्मरण करो, दुनिया में कुछ नाम पैदा करो। यदि तुम धर्म-पथ पर दृढ़ता के साथ चलोगे तो मैं बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अवश्य उस पथ का अवलंबन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हूँ, खबरदार, अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को उसमें हिस्सेदार मत बनाओ। क्या तुम्हें मुझसे और कुछ पूछना है?"

इतना कहकर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकर सिंह ने उससे यह सवाल किया :

प्रभाकर सिंह : मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊँ या न बनाऊँ?

मूर्ति : बनाओ और अवश्य बनाओ। पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी, उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा। अच्छा और कुछ पूछोगे?''

भूतनाथ : अब मैं कुछ पूछूँगा।

मूर्ति : पूछो क्या पूछते हो?

भूतनाथ : पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे?

मूर्ति : यदि तुम्हारी नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घड़ी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे।

गुलाबसिंहः हमें भी कुछ पूछना है।

मूर्ति : तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता, हाँ यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहाँ आ सकते हो परन्तु अकेले।

गुलाबसिंहः अच्छा तो अब यह बताइए कि हम भूतनाथ के मेहमान बने रहें या..

मूर्ति : नहीं, अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ का साथ छोड़ दो और प्रभाकर सिंह की आज्ञानुसार काम करो। बस अब कुछ मत पूछो।

इसके बाद मूर्ति ने बोलना बंद कर दिया। भूतनाथ, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह ने कई तरह के सवाल किए मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनों आदमी मंदिर के बाहर निकले और सभा-मंडप में बैठकर यों बातचीत करने लगे :

गुलाबसिंहः क्यों भूतनाथ, यह तो हमें एक नई बात मालूम हुई है। मैं स्वप्न में भी नहीं जान सकता था कि दयाराम जी को तुमने मारा होगा! अफसोस!!

भूतनाथ : गुलाबसिंह, आश्चर्य की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार होकर इस पत्थर की मूर्ति की बातों में फँस गए और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने लगे! इतना तक नहीं विचारा कि यह असंभव बात वास्तव में क्या है? निःसन्देह यह धोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है बल्कि यों कहना चाहिए कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक **(इस समय जो भी हो)** जरूर हमारा दुश्मन है।

गुलाबसिंहः नहीं-नहीं भूतनाथ, अब तुम हमें धोखे में डालने की कोशिश मत करो और न अब हम लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास ही कर सकते हैं। ऐसी आश्चर्यमय और अनूठी घटना का प्रभाव जैसा हम लोगों के ऊपर पड़ा उसे हमीं लोग जान सकते हैं।

भूतनाथ : खैर, तुम जानो, जो जी में आये करो और जहाँ चाहो चले जाओ, मैं तुम्हें अपने पास रहने के लिए जोर नहीं देता, मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो, मैं तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगा।

इसके बाद इन तीनों में किसी तरह की बातचीत न हुई, गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह पूरब की तरफ रवाना हुए और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया।

11

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते हैं। हम नहीं कह सकते कि यह कौन तथा किस रंग-ढंग का आदमी है, हाँ, इसके कद की ऊँचाई से साफ मालूम होता है कि यह औरत नहीं है बल्कि मर्द है मगर यह नहीं मालूम पड़ता कि अपनी पोशाक् के अन्दर यह किस ठाठ से है अर्थात् यह आदमी जिसने स्याह लबादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रखा है सिपाहियों और बहादुरों की तरह के हर्बे-हथियारों से सजा हुआ है या चोरों की तरह संधियों और हत्थियों वगैरह से। जो हो, हमें इसके ब्यौरे से इस समय कोई मतलब नहीं, हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल कर अपना समय बिता रहा है मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाए रखने की भी कोशिश कर रहा है। दिन का मुकाबला करने वाली चाँदनी यद्यपि अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर उस अँधकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों के झुरमुट के अन्दर पैदा हो रहा है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है। अगस्ताश्रम की तरफ घड़ी-घड़ी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है।

इसे टहलते हुए घंटा भर से ज्यादे हो गया और तब इसने दो आदमियों को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा ये दोनों कद के छोटे तथा ढाल-तलवार तथा तीर-कमान से सुसज्जित थे मगर इनकी पोशाक् के बारे में हम इस समय किसी तरह की निंदा या प्रशंसा नहीं कर सकते।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियों का इंतजार कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनों अगस्ताश्रम की चारदीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पीछा किया। उनके कुछ ही देर बाद यह स्याहपोश भी चारदीवारी के अन्दर जा पहुँचा मगर वहाँ उन दोनों पर निगाह न पड़ी। पहिले इसने मंदिर के चारों तरफ की परिक्रमा की और उन दोनों को ढूँढ़ा और जब पता न लगा तब मंदिर के अन्दर पैर रखा मगर वहाँ भी कोई न था।

हम पहिले कह आए हैं कि यह मंदिर बहुत छोटा और साधारण था अतएव इसके अन्दर किसी को खोजने में विलंब करना बेशक् पागलपन समझा जा सकता है मगर उस स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूब अच्छी तरह खोज डाला यहाँ तक कि उस छोटे-से कुंड में भी तलवार डाल कर जाँच लिया जिसमें हरदम पानी भरा रहता था।

उस स्याहपोश को बड़ा जी ताज्जुब हुआ और आश्चर्य के साथ सोचने लगा "वे दोनों आदमी कहाँ गायब हो गए! इस छोटे-से मंदिर में किसी तरह छिप नहीं सकते, इसके अतिरिक्त वहाँ विशेष अँधकार भी नहीं है क्योंकि सभा मंडप में चंद्रमा की चाँदनी जो आड़ होकर पहुँच रही है उसकी चमक से मंदिर के अन्दर का अंधकार भी इस योग्य नहीं रह गया है कि अपनी स्याह चादर के अन्दर भी किसी को छिपा सके, अस्तु यही कहना पड़ता है कि यहाँ की जमीन उन दोनों को खा गई। जो हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मंदिर मेरे दुश्मन का मुँह है। खैर कोई चिंता नहीं, अब मैं बाहर चलता हूँ क्योंकि गरमी से जी व्याकुल हो रहा है तिस पर भारी पोशाक् ने और भी तंग कर रखा है।"

इस तरह की बातें सोचता और कुछ बुदबुदाता हुआ वह आदमी मंदिर के बाहर निकला और फिर उसी जगह पेड़ों की झुरमुट और आड़ में जा पहुँचा जहाँ हम इसे पहले टहलते हुए देख चुके हैं। इस समय यहाँ एक आदमी और खड़ा है जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और जिसे देखते ही उस स्याहपोश ने पूछा, "केम?" इसके जवाब में उसने कहा, "चहा।"

जवाब सुनते ही स्याहपोश ने अपने ऊपर से स्याह लबादा उतार कर उसके हवाले किया और कहा, "अब मैं इसे नहीं ओढ़ सकता क्योंकि इस गरमी में तकलीफ होने के सिवाय अब इसकी जरूरत भी न रही, मैं भूतनाथ की सूरत में अच्छा हूँ मुझे कोई पहिचानने वाला नहीं। केवल गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह के खयाल से ओढ़ लिया था सो उनके मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं रही!"

दूसरे नकाबपोश ने यह लबादा ले लिया और जवाब में कहा, "मेरे लिए अब क्या आज्ञा होती है?"

पाठक अब समझ गए हों कि यह स्याहपोश वास्तव में भूतनाथ है अस्तु उसने अपने साथी नकाबपोश से कहा, "तुम्हारी यहाँ कोई जरूरत नहीं रही, तुम जाओ जो कुछ मैं पहिले हुक्म दे चुका हूँ उसी के अनुसार काम करो, मैं जब यहाँ से जल्दी नहीं टल सकता क्योंकि इस मंदिर ने मुझे अपने जाल में फँसा लिया है।

नकाबपोश चला गया और भूतनाथ फिर उसी अँधकार में टहलने लगा। कुछ देर बाद उस मंदिर में अन्दर से दो आदमी बाहर निकले और दक्खिन की तरफ चल पड़े। हम नहीं कह सकते कि ये वे ही थे जो पहिले मंदिर में जाकर गायब हो गए थे अथवा कोई दूसरे।

भूतनाथ ने उन दोनों का पीछा किया मगर बड़ी कठिनता से अपने को छिपाता और उन्हें देखता हुआ जाने लगा क्योंकि चाँदनी उसके काम में बाधा डाल रही थी। लगभग आध कोस जाने के बाद वे दोनों एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ की जमीन पत्थर के बड़े-बड़े ढोकों से कुछ भयानक-सी हो रही थी उसी जगही खोह का एक मुहाना भी था जिसे भूतनाथ ने सहज ही में समझ लिया और यह इरादा कर लिया कि इन दोनों को यहाँ पर खोह के अन्दर घुसने के पहिले ही रोक लेना चाहिए, ताज्जुब नहीं कि खोह के अन्दर जाने पर ये फिर मेरे हाथ न लगें।

वे दोनों आदमी खोह के मुहाने पर पहुँच कर रुके और आपस में कुछ बातें करने लगे। उसी समय भूतनाथ उनके पास जाकर खड़ा हो गया और यह देखकर कि उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है बोला, "तुम दोनों कौन हो?"

एक : तुम्हें इससे मतलब?

भूतनाथ : मतलब यही है कि यह स्थान हमारी हुकूमत के अन्दर है और हम जानना चाहते हैं कि तुम दोनों कौन हो और तुम्हारे उस अगस्ताश्रम के मंदिर जाने-आने का कारण क्या है?

एक : न तो इस सरजमीन के तुम मालिक ही हो और न ही तुम्हें कुछ पूछने का कोई अधिकार ही है। जिस तरह एक बेईमान और नमक हराम ऐयार बेईज्जती के साथ अपनी जिंदगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिंदगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते। हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो!

भूतनाथ : **(गुस्से से पेच खाकर)** मालूम होता है कि तुम दोनों की शामत आई है जिससे मेरी बातों के साफ-साफ जवाब न देकर जली-कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से संबोधन करते हो। मैं नहीं जानता कि गदाधरसिंह किस चिड़िया का नाम है पर संभव है कि यह कोई भेद की बात हो, इसलिए मैं गदाधरसिंह के बारे में कुछ नहीं पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हूँ कि तुम दोनों आदमी अपना परिचय दो नहीं तो..

एक : नहीं तो क्या, तुम हमारा कर ही क्या सकते हो? पहिले तुम अपनी जान बचाने का बंदोबस्त तो कर लो। हम लोग तुम्हारी झूठी बातों से धोखा नहीं खा सकते, बस चले जाओ और अपना काम करो, हम लोगों का पीछा करके तुम अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते।

भूतनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा और उसने फिर पूछा।

भूतनाथ : मैं समझता हूँ कि तुम दोनों मर्द नहीं बल्कि औरत हो। खैर इससे भी कोई मतलब नहीं। मैं वह आदमी नहीं हूँ जो किसी तरह का मुलाहिजा कर जाऊँ, इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो!

इतना कहकर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली मगर उन दोनों का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा "चल दूर हो मेरे सामने से। तेरी निर्लज्ज तलवार से हम डर नहीं सकते! समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा।"

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढ़ाकर एक की कलाई पकड़ ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था। वह छुरी यद्यपि बहुत बड़ी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका। छुरी भूतनाथ के बगल में चार अँगुल धँस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा "ओफ, यह जहरीली छुरी...।"

12

दिन पहर-भर से ज्यादे चढ़ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारों तरफ निगाहें दौड़ाने लगा। उसने अपने को एक ऐसा कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जवाँमर्दी उसे बाहर नहीं कर सकती थी। यद्यपि वह कैदखाना बहुत छोटा और अँधकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थीं तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिए छोटा दरवाजा भी था जो इस समय वहुत बड़े ताले से वंद था। इस कैदखाने के अन्दर वैठा-वैठा भूतनाथ अपने सामने के दृश्य वहुत अच्छी तरह देख सकता था। थोड़ी देर इधर-उधर निगाह दौड़ाने के वाद वह उठ खड़ा हुआ और जंगले के पास आकर वड़े गौर से देखने लगा। उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर वयान कर चुके हैं, जो कला और विमला के कब्जे में है, अथवा जहाँ की सैर अभी-अभी प्रभाकर सिंह कर आए हैं। वीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ वड़े गौर के साथ देख रहा था क्योंकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था पहाड़ की ऊँचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ-साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चंचल निगाहें इस बात की जाँच कर रही थीं कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है।

इस घाटी में न कभी वह आया था इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था, अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की घाटी है अथवा उसके पास ही में उसका निजी मकान है जहाँ वह रहता है।

थोड़ी देर तक बड़ी गौर से इधर-उधर देखने के वाद भूतनाथ हताश होकर बैठ गया और तरह-तरह की वातें सोचने लगा। उसे इस बात का बहुत ही दुःख था कि उसके हरवे छीन लिए गए थे और उसका ऐयारी का वटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म में कोई विशेष तकलीफ न थी जिसकी बदौलत वह वेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था।

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाथ की आँखों के सामने चमक रही थी। भूख तो कोई वात नहीं मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था। वह सोच रहा था कि उसे दाना-पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या वह भूखा ही पिंजरे में बंद रहेगा क्योंकि अभी तक किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी।

थोड़ी देर और वीत जाने के वाद एक औरत वहाँ आई जिसके पास भूतनाथ के लिए खाने-पीने का सामान था। उसने वह सामान वड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा, "लो गदाधरसिंह, तुम्हारे लिए खाने-पीने का सामान आ गया है। इसे खाओ और मौत का इंतजार करो।"

भूतनाथ : **(पानी का लोटा उठाकर)** हाँ, ठीक है, वस मेरे लिए यही काफी है, मैं सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इंतजार करूँगा क्योंकि जव तक मैं जंगल-मैदान और स्नान इत्यादि कर्म न कर लूँ भोजन नहीं कर सकता।

औरत : खैर तुम्हारी खुशी, मेरा जो काम था उसे मैं पूरा कर चुकी। मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हूँ कि तुम कै दिन तक इस तरह गुजारा कर सकोगे? **(कुछ सोचकर)** नहीं, मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मैं खूव जानती हूँ कि दो-तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फैसला हो जाएगा और तुम इस दुनिया से उठा दिए जाओगे।

भूतनाथ : अगर ऐसा ही है तो यह दो-तीन दिन का विलंब भी क्यों?

औरत : इसलिए कि तुम्हारी मौत का ढंग निश्चय कर लिया जाय।

भूतनाथ : ढंग कैसा मैं नहीं समझा!

औरत : मतलव यह है कि तुम एकदम से नहीं मार डाले जाओगे बल्कि तरह-तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान ली

जाएगी, अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है कि किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिए उचित है।

भूतनाथ : ये बातें कौन तजवीज कर रहा है?

औरत : हमारे मालिक लोग।

भूतनाथ : मालूम होता है कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नहीं हैं हींजड़े हैं या औरत। ऐसे विचार मर्दों के नहीं होते!

औरतः वेशक् ऐसा ही है, हमारे मालिक औरत हैं।

भूतनाथ : **(आश्चर्य से)** औरत है!!

औरत : हाँ औरत।

भूतनाथ : मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नहीं कि वल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना दुश्मन वतावे और कहे कि गदाधरसिंह ने मुझे वर्वाद कर दिया।

औरत : जो हो, इस विषय में मैं नहीं कह सकती, आखिर कोई वात होगी ही तो!!

भूतनाथ : क्या तुम वता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है अथवा वह कौन है? तुम यकीन रखो कि इसके वदले में मैं तुम्हें इतनी दौलत दूँगा कि कभी तुमने आँखों से न देखी होगी।

औरत : मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा दूँ और तव तुम मुझे वेअंदाज दौलत देकर मालामाल कर दो, इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन के कब्जे में है।

भूतनाथ : नहीं, नहीं, मैं यह नहीं कहता, तुम मुझे इस कैदखाने से वाहर कर दो।

औरत : अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझे किस काम के लिए और कहाँ से दौलत दे सकते हो!

भूतनाथ : मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं, मगर मेरे पास ही हरदम बटुए में दो-चार लाख रुपए की जमा मौजूद रहती है। तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नहीं है..

औरत : हाँ-हाँ, मैं यही कहने वाली थी, बल्कि यह भी समझ रखना चाहिए कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में होगा उसने वह रकम भी जरूर निकाल ली होगी।

भूतनाथ : **(बनावटी हँसी के साथ)** नहीं नहीं, इसका तो तुम गुमान ही न करो कि वह रकम निकाली गई होगी, क्योंकि उसके कोई जवाहिरात की डिबिया नहीं है या कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले, बल्कि उस वटुए में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता नहीं सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह में विलकुल रद्दी चीज है, बल्कि यों समझो कि जहाँ वह दौलत रखी हई है वहाँ की ताली उस बटुए में है जिसकी कलई मेरे सिवाय कोई खोल नहीं सकता और न मेरे वताए बिना कोई पा ही सकता है। वह दौलत जो लगभग चार-पाँच लाख रुपये की होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे देना चाहता हूँ कि मेरा बटुआ मुझे ला दिया जाय और वता दिया जाय यह स्थान किसका है और मैं किसका कैदी हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं जरूर मार ही डाला जाऊँगा, अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक, रहमदिल और गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़कर खुशी की वात और क्या हो सकती है।

अहा, दुनिया में रुपया भी एक अजीब चीज है! इसकी आँच को सह जाना हँसी-खेल नहीं है। इसे देखकर जिसके मुँह

में पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है, पूरा तपस्वी है और सचमुच का देवता है। इस कम्बख्त की बदौलत बड़े-बड़े घर सत्यानाश हो जाते हैं, भाई-भाई में बिगाड़ हो जाता है, दोस्तों की दोस्ती में बट्टा लग जाता है, जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है, और ईमानदारी की साफ और सफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुड़ाए नहीं छुटता, इसे देखकर जो धोखे में न पड़ा, इसे देखकर जिसका ईमान न टला, और इसे जिसने हाथ-पैर का मैल समझा, बेशक् कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है।

इसकी आँच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तक कड़ा रह सकता था? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार-चढ़ाव को बहुत सम्हाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फँदे में फँस गई।

भूतनाथ : सच तो यों है कि उस दौलत को मैं बहुत ही सस्ते दाम में बल्कि मुफ्त मोल बेच रहा हूँ, अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूँगा कि तुमसे बढ़कर बदनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। क्या वह दौलत कम है? क्या उसे पाकर फिर भी किसी को नौकरी की जरूरत रह सकती है? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने में किसी तरह की त्रुटि हो सकती है? बिलकुल नहीं फिर सोच-विचार करना क्यों और विलंब कैसा? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और बता देना कि मैं किसका कैदी हूँ और इस स्थान का मालिक कौन है। सिर्फ इतने ही के बदले में अभी-अभी वह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा।

औरत : तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हूँ। मेरी मालकिन बेअंदाज दौलत लुटाने वाली है, और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की परवाह नहीं है...

भूतनाथ : **(बात काटकर)** मगर लौंडीपन का तौक गले में जरूर पड़ा हुआ है। स्वतंत्र नहीं, लापरवाह और बेफिक्र नहीं।

औरत : हाँ, यह सच है मगर उनकी नौकरी मुझे गढ़ाती नहीं और वे मुझसे बहिनापे का-सा बर्त्ताव करती हैं, मगर फिर भी तुम खुशी से दोगे तो मैं उस दौलत को जरूर ले लूँगी लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में जब कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके।

ग्रंथकर्ता : सत्यवचन! नमकहराम!! भला ऐसी भी कोई बात है!!

भूतनाथ : नहीं नहीं, तुम पर नमकहरामी का धब्बा नहीं लग सकेगा और तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नहीं होगा क्योंकि मैं इस कैदखाने से छूटकर भाग नहीं जाना चाहता, केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मैं किसकी कैद में हूँ और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए माँगता हूँ कि उस खजाने की ताली निकालकर तुम्हें दे दूँ और तुम्हें बता दूँ कि वह खजाना कहाँ है।

औरत : अच्छा पहिले मैं बटुआ लाकर तुम्हें दे दूँ तब पीछे बता दूँगी कि तुम किसके कैदी हो, सब्र करो और दिन बीत जाने दो, देखो वह दूसरी लौंडी आती है, अब मैं विदा होती हूँ।

इतना कहकर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौधा जमाकर चली गई।

भूतनाथ बड़ा ही कट्टर और दुःख-सुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था। कठिन से कठिन समय आ पड़ने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नहीं आता था।

खाने-पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था उसमें से पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यों-का-त्यों पड़ा रह गया। भूतनाथ को सिर्फ इस बात का इंतजार था कि दिन बीते, अँधेरा हो और वह लौंडी आवे, इस बीच में बारी-बारी से आठ-दस लौंडियाँ उसके पास आईं, उन्होंने तरह-तरह की बातें कीं और खाने के लिए समझाया बल्कि यह तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी

बातों का जवाब तक न दिया और वे सब निराश होकर लौटती गईं।

दिन बीत गया, संध्या हुई और अँधकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया। दो घंटे रात जाते-जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया। उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बंद था। पेड़ों की बहुतायत होने के कारण इतना अँधकार था कि किसी का आना-जाना दूर से मालूम नहीं हो सकता था।

भूतनाथ जंगले का सीखचा पकड़े हुए खड़ा कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहिनी मंत्र चल चुका था और जो लालच के सुनहरे जंगले के सुराख1 से हाथ बढ़ाकर धीरे से बोली, "लो गदाधरसिंह, यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है। इसके लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी।"

भूतनाथ : बेशक्, हमारा और तुम्हारा दोनों का काम चल गया। **(संभलकर, क्योकि उसके मुँह से हमारा नाम निकल गया यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नहीं चाहता था)** मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वालों का पता लग जाएगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतंत्र हो जाओगी।

इतना कहकर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा, "क्या इसमें मेरा सामान ज्यों-का-त्यों पड़ा हुआ है?"

लौंडी : बेशक्।

भूतनाथ : तब मैं रोशनी करके देखूँ और वह ताली निकालूँ?

लौंडी : नहीं नहीं, रोशनी करने का मौका नहीं है, जो कुछ तुम्हें करना है अंधेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोलकर निकालो, मैं तुम्हें फिर भी विश्वास दिलाती हूँ कि तुम्हारी सब चीजें इसमें ज्यों-की-त्यों रखी हैं।

भूतनाथ : खैर कोई चिंता नहीं, मैं सब काम अँधेरे ही में कर सकूँगा, अगर मेरी चीजें ज्यों-की-त्यों रखी हैं और इधर-उधर नहीं की गईं तो मुझे रोशनी की कोई भी जरूरत नहीं है। अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिए अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिए कि मैं किसका कैदी हूँ।

लौंडी : हाँ मैं बताती हूँ **(कुछ सोच कर)** मगर मैं फिर सोचती हूँ कि यह काम मेरे लिए बिलकुल ही अनुचित होगा, मालिक का नाम तुम्हें बता देना निःसन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना है।

भूतनाथ : यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नहीं है बल्कि बेवकूफी है, हाँ यदि मैं स्वतंत्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था। तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हूँ और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है। फिर भी इस समय कर ही क्या सकता हूँ, सोचो तो..

लौंडी : हाँ, एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है, अच्छा मैं बताए देती हूँ कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया।

भूतनाथ : बस मैं इतना ही सुनना चाहता हूँ।

लौंडी : तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेईमानी और नमकहरामी करके बड़ी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है। दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नहीं हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है।

भूतनाथ : **(चौंक कर ताज्जुब के साथ)** है, क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं? और उनकी इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैंने ही मार डाला है।

लौंडी : हाँ, वे दोनों जीती हैं, और उन्हें इस बात का विश्वास है।

भूतनाथ : मगर यह बात सच नहीं है, अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नहीं मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है।

लौंडी : खैर इन बातों से तो मुझे कोई संबंध नहीं, मैं तो लौंडी ठहरी, जो कुछ सुनती हूँ वही जानती हूँ!!

भूतनाथ : अच्छा-अच्छा, मुझे इन बातों से कुछ फायदा भी नहीं है, बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिए कि तुम सच कहती हो और वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं। मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बड़ी सच्चाई के साथ उड़ी थी और उनके क्रियाकर्म में बहुत ज्यादा रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निजीतौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। इस बारे में तुम मुझे क्योंकर धोखा दे सकती हो!!

लौंडी : तुम जो चाहो समझो और कहो, मैं तुमसे बहस करने के लिए नहीं आई हूँ और न ही रहस्यों को जानती हूँ, बात जो सच है वही कह दी है।

भूतनाथ : मगर मुझे विश्वास नहीं आता।

लौंडी : विश्वास नहीं आता तो जाने दो।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में मैं इनाम भी नहीं दे सकता।

लौंडी : मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है।

भूतनाथ : अच्छा तो जाओ अपना काम देखो।

लौंडी : बटुआ मुझे वापस कर दो, जहाँ से मैं लाई हूँ वहाँ रख आऊँ और बदनामी से बचूँ।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता था और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अँधेरे में टटोल-टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंडी को कुछ भी न थी और न अँधकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी। अस्तु लौंडी की बात का भूतनाथ ने पुनः यों उत्तर दिया

भूतनाथ : बदनामी से तो तुम किसी तरह बच सकती हो, अगर मैं यह बटुआ तुम्हें वापस न दूँ तो तुम क्या करोगी?

लौंडी : मैं खूब चिल्लाऊँगी कि किसी लौंडी ने यह बटुआ लाकर भूतनाथ को दे दिया है।

भूतनाथ : लेकिन लोगों के इकट्ठा हो जाने पर मैं यही कह दूँगा कि इसी लौंडी ने लाकर दिया है।

लौंडी : मगर इस बात का किसी को विश्वास न होगा।

भूतनाथ : **(हँस कर)** मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो, खैर तुम नहीं तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकड़ी जाएगी।

लौंडी : जो होगा देखा जाएगा।

भूतनाथ : मगर नहीं, ये मैं ऐसा बेईमान नहीं हूँ, लो यह बटुआ देता हूँ, जहाँ से तुम लाई हो रख आओ। क्या कहूँ, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास ही नहीं होता, नहीं तो मैं यह खजाना जरूर तुम्हें दे देता।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह बटुआ लौंडी की तरफ बढ़ाया। उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह

कहती वहाँ से चली गई, "बुरे लोगों से बातचीत करना भी बुरा ही है, इस काम के लिए मुझे जिंदगी-भर पछताना पड़ेगा।"

जब लौंडी कुछ दूर चली गई तो भूतनाथ ने धीरे-से यह जवाब दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था "तुम्हारे लिए चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया। अब मैं इस पेचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह सुलझा लूँगा।"

भूतनाथ ने बात करते-करते उस बटुए में से जो कई चीजें निकाल ली थीं उनमें कुछ शीशियाँ भी थीं जिनमें किसी तरह का अर्क था। एक शीशी का अर्क किसी ढंग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सींखचों की जड़ में लगाया और उसके कुछ देर बाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोमबत्ती की तरह हो गया और भूतनाथ ने उसे बड़ी आसानी से हटाकर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया। बात-की-बात में भूतनाथ कैद खाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही, मगर उसके लिए इस घाटी से बाहर हो जाना बड़ा ही कठिन था। एक तो अँधेरी रात दूसरे पहाड़ की ढालवीं और अनगढ़ ढोकों वाली पथरीली जमीन, तिस पर पगडंडी और रास्ते का कुछ पता नहीं। मगर खैर जो होगा देखा जाएगा, भूतनाथ को इन बातों की कुछ परवाह न थी।

अब हम थोड़ा-सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ वापस लेकर चली गई थी।

उसे अपने किये पर बड़ा ही पछतावा था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसने भूतनाथ से अपने मालिकों का नाम बता दिया जो अपने को बहुत ही छिपाकर इस घाटी में रहती थीं। अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूटकर निकल गया तो मेरे इस कर्म का बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिकों को सख्त तकलीफ उठानी पड़ेगी। वह यही सोचती जा रही थी कि मैंने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड़ कर अपने बेकसूर मालिकों के साथ ऐसी बेईमनी का बर्त्ताव किया! अब क्या किया जाय और मैं इस पाप का क्या प्रायश्चित करूँ?

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि भूतनाथ का यह बटुआ कुछ हल्का मालूम पड़ता है। इसमें अब वह वजन नहीं है जो पहिले था जब मैं लाई थी। मालूम होता है, भूतनाथ ने अँधेरे में टटोलकर अपने मतलब की चीज निकाल ली। अपने हाथ की रखी हुई चीज निकालने के लिए बुद्धिमान आदमी को रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। भूतनाथ ने बड़ी चालाकी की, अपना काम कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर विदा किया! मैं ही ऐसी कमबख्त थी जो उसके फँदे में आ गई, अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा!!

इसी तरह की बातें सोचती वह लौंडी वहाँ से चली गई।

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी कला, विमला और इंदुमति की आँखों में नींद नहीं है। न मालूम किस गंभीर विषय पर ये तीनों विचार कर रही हैं! संभव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हों, अस्तु जो कुछ हो इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जाएगा।

इंदुमति : **(बिमला की तरफ देख कर)** बहिन, जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह **(भूतनाथ)** ने मार डाला है तब उसके लिए बहुत बड़े जाल फैलाने और सोच-विचार करने की जरूरत ही क्या है? जब वह कमबख्त तुम्हारे कब्जे में आ गया तो उसे मार कर सहज ही में बखेड़ा तै करो!

विमला : **(ऊँची साँस लेकर)** हाय बहिन, तुम क्या कहती हो? इस कमीने को यों-ही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जाएगी? क्या कहा जाएगा कि मैंने इसे मार कर अपना बदला ले लिया? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है। इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दुःख और इसे हो तब मैं समझूँ कि मैंने कुछ बदला लिया।

इंदुमति : बहिन, तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि यह तुम्हरे कब्जे से निकल गया या तुम्हारे असल भेद की इसे खबर हो गई तो बहुत बुरा हो जाएगा।

विमला : बल्कि अनर्थ हो जाएगा। तुम्हारा कहना बहुत कठिन है, मगर उसे हमारा भेद कुछ भी मालूम नहीं हो सकता और न यहाँ से निकल कर भाग ही जा सकता है।

इंदुमति : ईश्वर करे ऐसा ही हो मगर..

कला : कल इन्द्रदेव जी यहाँ आएंगे, उनसे राय करके कोई-न-कोई कार्रवाई बहुत जल्दी हो जाएगी।

बिमला : मैं सोच रही हूँ कि तब तक उसकी **(पड़ोस वाली)** घाटी पर कब्जा कर लिया जाय, उसका सदर दरवाजा जिधर से वे लोग आते-जाते हैं बंद कर दिया जाय, उसके आदमी सब मार डाले जायें और उसका माल-असबाब सब लूट लिया जाय और इन बातों की खबर भूतनाथ को भी दे दी जाएँ।

इंदुमति : बहुत अच्छी बात है।

बिमला : और इतना काम मैं सहज ही में कर सकूँगी।

इंदुमति : सो कैसे?

बिमला : तुम देखती रहो, सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा।

इंदुमति : हाँ, कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिए जिससे इन्द्रदेव जी जाएँ तो उनके दिल को भी ढांढस पहुँचे।

बिमला : कल नहीं आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बंद कर दिया जाय जिसमें लोग भाग कर बाहर न चले जाएँ।

कला : ऐसा हो जाय तो बहुत अच्छी बात है, मगर दूसरे के घर में तुम इस तरह की कार्रवाई..

बिमला : **(मुसकुराकर)** नहीं बहिन, तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो। बात यह है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी

जिसमें हम लोग रहती हैं इन्द्रदेव जी के अधिकार में है, उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेव जी के अधिकार में है। यह दोनों घाटी एक ही हैं, या यों कहो कि एक ही मान का यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनों जगहों का पूरा-पूरा भेद इन्द्रदेव जी को मालूम है और उन्होंने जो कुछ भी मुझे बताया है मैं जानती हूँ, इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नहीं है। यह घाटी जिसमें मैं रहती हूँ हमेशा बंद रहती थी मगर उस घाटी का दरवाजा बराबर न जाने क्यों खुला ही रहता था, शायद इसका सबब यह हो कि उस घाटी में कोई जोखिम की चीज नहीं है और न कोई अच्छी इमारत ही है, अस्तु भूतनाथ यह भी नहीं जानता कि उस घाटी का दरवाजा कहाँ है तथा क्योंकर खुलता और बंद होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है या नहीं। भूतनाथ को घूमते-फिरते इत्तिफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना घर बना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेव जी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होंने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर यहाँ के बहुत से भेद बता दिए। बस अब मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरी बातों का तत्व मालूम हो गया होगा।

इंदुमति : हाँ अब मैं समझ गई, ऐसी अवस्था में तम जो चाहो सो कर सकती हो।

बिमला : अच्छा तो मैं जाती हूँ और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ।

इतना कहकर बिमला उठ खड़ी हुई और इंदुमति तथा कला को उसी जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर निकलने लगी, मगर इंदु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने पर भी न मानी, लाचार बिमला इंदु को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड़ गई।

भूतनाथ का साथ छोड़कर प्रभाकर सिंह के इस घटी आने का हाल हमारे पाठक भूले न होंगे। उन्हें याद होगा कि भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाली सुरंग के बीच में एक चौमुहानी थी जहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने भूतनाथ और इंदुमति का साथ छोड़ा था और कला तथा बिमला के साथ दूसरी राह पर चल पड़े थे। आज इंदुमति को साथ लिए बिमला पुनः उसी जगह जाती है।

उस सुरंग के अन्दर वाली चौमुहानी से एक रास्ता तो भूतनाथ की घाटी के लिए था, दूसरा रास्ता सुरंग के बाहर निकल जाने के लिए था, और तीसरा तथा चौथा रास्ता **(या सुरंग)** कला और बिमला के घाटी में आने के लिए था। एक रास्ता तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकर सिंह आए थे और दूसरा रास्ता बिमला के महल में जाता था।

बिमला के घर आने वाले दोनों रास्ते एक रंग-ढंग के बने हुए थे और इनके अन्दर के तिलिस्मी दरवाजे भी एक ही तरह के साथ गिनती में एक बराबर थे, अस्तु एक सुरंग का हाल पढ़कर पाठक समझ जाएँगे कि दूसरी तरफ वाली सुरंग की अवस्था भी वैसी ही है जो बिमला के घर को जाती है।

उस सुरंग की चौमुहानी पर पहुँचकर जब बिमला की घाटी से आने वाली सुरंग की तरफ बढ़िए तो कई कदम जाने के बाद एक **(कम ऊँची)** दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यों-ज्यों आगे बढ़िए त्यों-त्यों वह दहलीज ऊँची होती जाएगी, यहाँ तक कि बीस-पच्चीस कदम आगे जाते-जाते वह दहलीज ऊँची होकर सुरंग की छत के साथ मिल जाएगी और फिर पीछे को लौटने के लिए रास्ता न रहेगा। उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे कायदे के साथ घूमाने पर वह दरवाजा खुल सकता है। अगर वह पेंच न घुमाया जाय और दहलीज के अन्दर कोई न हो, और जाने वाला आगे निकल गया हो, तो खुद-ब-खुद भी वह रास्ता बारह घंटे के बाद खुल जाएगा और वह दहलीज धीरे-धीरे नीची होकर करीब-करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यों-की-त्यों हो जाएगी।

रास्ता कैसा पेचीदा और तंग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख जाए हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। लगभग तीन सौ कदम जाने के बाद एक और बंद दरवाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बंद होता है। पेंच घुमाकर खोल देने पर भी उसके दोनों पल्ले अलग नहीं होते, भिड़के रहते हैं। हाथ का धक्का दीजिए तो खुल जाएँगे और कुछ देर बाद आप-से-आप बंद भी हो जाएँगे मगर पुनः दूसरी बार केवल धक्का देने से वह दरवाजा न खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पड़ेगी। दोनों दरवाजों के दोनों तरफ एक ही ढंग के तिलिस्मी पेंच दरवाजा खोलने

और वंद करने के लिए वने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त उस सुरंग का सदर दरवाजा भी **(जिसके अन्दर घुसने के वाद चौमुहानी मिलती थी)** वंद हो सकता था और यह वात विमला के अधीन थी। केवल इतना ही नहीं, उस चौमुहानी से भूतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाली सुरंग में भी एक दरवाजा **(इन दोनों सुरंगों की तरफ)** था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर विमला उसे भी बंद कर सकती थी।

इंदु को साथ लिए हुए विमला उसी सुरंग में घुसी और उस सुरंग के भेद इंदु को समझाती तथा दरवाजा खोलती और वंद करती हुई उस चौमुहानी पर पहुँची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहाँ प्रभाकर सिंह ने इंदु का साथ छोड़ा था। वहाँ पहुँचकर कुछ देर के लिए विमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नहीं है। जव सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के वहाँ होने का गुमान न रहा तव वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरंग में घुसी और दस-वारह कदम जाने के वाद दीवार के अन्दर वने हुए किसी कल-पुरजे को घुमाकर उस सुरंग का रास्ता उसने वंद कर दिया। लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकला और रास्ता वंद करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया।

इसके वाद विमला सुरंग के सदर दरवाजे पर दरवाजे वंद करने के लिए पहुँची ही थी कि सुरंग के अन्दर घूमते हुए भूतनाथ के शागिर्द भोलासिंह पर निगाह पड़ी और उसने भी इन दोनों औरतों को देख लिया। वह इंदु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पड़ते ही पहिचाना गया और आश्चर्य के साथ देखता हुआ वोला "आह, मेरी रानी तुम यहाँ कहाँ? तुम्हारे लिए तो हमारे गुरुजी वहुत परेशान हैं!!"

इस जगह वखूवी उजाला था इसलिए इंदु ने भोलासिंह को और भोलासिंह ने इंदु को बखूबी पहिचान लिया। इंदु पर क्या-क्या मुसीवतें गुजरीं और प्रभाकर सिंह कहाँ गए इन वातों की खवर भोलासिंह को कुछ भी न थी, इसलिए वह इस समय इंदु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुव करने लगा। इंदु ने धीरे से विमला को समझाया कि यह भूतनाथ का शागिर्द है।

इंदु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित् नहीं जानती थी। वह उसकी बात का जवाव दिया ही चाहती थी कि विमला न उँगली दवाकर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़कर कहा, "तुम्हारे गुरुजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी वदौलत उसी आफत से मेरी भी जान बची है!"

भोलासिंह : गुरुजी कहाँ हैं?

विमला : हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनो कि उन्होंने इस बीच में कैसे-कैसे अनूठे काम किए हैं।

भोलासिंह : चलो-चलो, मैं वहुत जल्द उनसे मिलना चाहता हूँ।

विमला ने इंदु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई।

विमला इस सुरंग का सदर दरवाजा बंद न कर सकी, खैर इसकी उसकी ज्यादे परवाह भी न थी। चौमुहानी से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता वन गया था उसी को बंद कर उसने संतोष लाभ कर लिया। बिमला के पीछे-पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुँचा मगर जब बिमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाली सुरंग में रवाना हुई तव भोलासिंह रुका और वोला, "इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने को मना कर दिया था। आज वे इधर कैसे गए!"

विमला : हाँ पहिले उनका शायद ही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में बैठे हुए है।

भोलासिंह : क्या इसके अन्दर कोई मकान है?

विमला : हाँ, बहुत सुन्दर मकान है।

भोलासिंह : कितनी दूरी पर?

विमला : बहुत थोड़ी दूर पर, तुम आओ तो सही।

"ये दोनों औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी!" यह सोच भोलासिंह आगे वढ़ा और इनके साथ सुरंग के अन्दर घुस गया।

जो हाल प्रभाकर सिंह का इस सुरंग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता वंद हो गया और विमला तथा इंदु के आगे वढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर-जोर से पुकारने और टटोल-टटोल कर आगे की तरफ वढ़ने लगा।

प्रभाकर सिंह को इसके आगे का दरवाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दरवाजा खुला हुआ न मिला। उसे दोनों दरवाजों के अन्दर बंद करके विमला और इंदु अपने डेरे की तरफ निकल गईं।